मासिक

श्री स्वामिनारायण

प्रकाशन दिनांक प्रत्येक महीने की ११ तारीख ● पूर्ण अंक २२८ अंक जुलाई-२०२६
Volume no. 19, • Issue No. 228 • July 2026



राजोपचार पूजन







प्रकाशक : श्री स्वामिनारायण मंदिर अहमदाबाद-३८०००१. Publisher: Shree Swaminarayan Temple, Ahmedabad- 380001 Rs.5/-

विश्व का सर्व प्रथम श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर में अधिक मास के उत्सवो की झाँकी



पू. गादीवालाश्री के सांनिध्य में हवेली में मेडिकल कैम्प



संस्थापक

श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री १००८

श्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री

श्री स्वामिनारायण म्युजियम

नारायणपुरा, अहमदाबाद.

फोन : २७४९९५९७, २७४१९५९७

www.swaminarayanmuseum.com

श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति

प.पू.ध.धु. आचार्य १००८

श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्रीकी

आज्ञा से

तंत्रीश्री

स.गु. शास्त्री स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी

(महंत स्वामी)

मो. ९३१३७१९२३२

पत्र व्यवहार

श्री स्वामिनारायण मासिक कार्यालय

श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर,

अहमदाबाद-३८० ००१.

मो. ९३१३७०६०९५

magazine@swaminarayan.in

www.swaminarayan.info

पतेमें परिवर्तन के लिये

E-mail :

magazine@swaminarayan.in

मूल्य - प्रति वर्ष ५०-०० ● प्रति कोपी ५-००

श्री स्वामिनारायण

श्री नरनारायणदेव पीठस्थान मुखपत्र

वर्ष - १९ ● अंक : २२८ ● जुलाई-२०२६

अ नु क्र म णि का

०१.	अस्मदीयम्	०४
०२.	प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री, प.पू. लालजी महाराजश्री के कार्यक्रम की रुपरेखा	०५
०३.	श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति के मुख से अमृतवचन	०६
०४.	आदि आचार्यश्री अयोध्याप्रसादजी महाराजश्री	११
०५.	देश विभाग के लेख के आधार पर सम्प्रदाय का संविधान	१५
०६.	श्री स्वामिनारायण म्युजियम के द्वार से	१८
०७.	भक्ति सुधा	१९
०८.	सत्संग समाचार	२२

अस्मदीयम्

अधिक ज्येष्ठ पवित्र पुरुषोतत्म माह में वर्ष मध्य आने वाले अपने उत्सवो-पाटोत्सवो, जन्मोत्सव, अन्नकूटोत्सव, महापूजा, महाभिषेक, राजोपचार, तुलसी विवाह इस अनेक उत्सव प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री, प.पू. बड़े महाराजश्री, प.पू. लालजी महाराजश्री और प.पू.अ.सौ. गादीवालाश्री एवम् पूरे धर्मकुल के सानिध्य में श्री नरनारायणदेव के समक्ष अनेकविधी, अलौकिक और भव्यता के साथ मनाया गया। हजारो प्रेमी भक्तोने दर्शन करके धन्यता का अनुभव किये।

प.पू.अ.सौ. लक्ष्मीस्वरुप गादीवालाश्री की हाजिरी में हवेली में भी भव्य उत्सव, कथा, कीर्तन भक्ति आदि के कार्यक्रम अधिक मास में विशेषकर मनाये गये थे। जिस में हजारो बहनोने लाभ लिया था।

श्री नरनारायणदेव देश में उत्सव-समैया लगातार चलता रहता है। तीन कथा पारायण प्रसादी सभा के मंडप में एक मास में की गयी।

आने वाले उत्सवो में हिंडोला दर्शन, चातुर्मास और प.पू. लालजी महाराजश्री का प्रगटोत्सव अषाढ वद-१० वी भव्यता के साथ मनाया जायेगा।

अपने हरिभक्तो को अधिक धन्यवाद है कि प्रति उत्सव में यजमान बन करके बडा लाभ लिये। परमकृपालु श्री नरनारायणदेव के चरणो में प्रार्थना है कि अपने सानिध्य में लगातार ऐसे उत्सव-महोत्सव को मनाने का अविरत लाभ भक्तो को मिलता रहे।

विशेषकर प्रत्येक हरिभक्तो के घर देश-विभाग की लेख पुस्तिका अवश्य होना चाहिए। जो नही लिये है। वे लोग अहमदावाद, कालुपुर मंदिर से (निःशुल्क) ले सकते है। प.पू. लालजी महाराजश्री की विशेष आग्रह है।

शिक्षापत्री श्लोक १४७ श्रीहरि के आज्ञानुसार हरिभक्तो के लिये दशांश-विशांस धर्मादा अपने आप से श्री नरनारायणदेव अहमदाबाद कोठार में पक्की रसीद ले लेना चाहिए। अभी कई हरिभक्त महाराज के आज्ञा का पालन नही करते है। उन्हे केवल यह समझना चाहिए की जो आज सुख मिला है। यह मात्र श्री नरनारायणदेव की कृपा से मिला है। जो यह ध्यान देकर उपरोक्त आज्ञा का पालन करेगा तो वह विशेष सुख प्राप्त करेगा।

संपादकश्री (महंत स्वामी)
शास्त्री स्वामी पुरुषोतमप्रकाशदासजी का
जयश्री स्वामिनारायण

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री कार्यक्रम की रुपरेखा (जून-२०२६)

६ श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर पारायण अवसर पर पधारना।
११ एकादशी को श्री नरनारायणदेव के दर्शन हेतु पधारना।
१८ श्री नरनारायणदेव के दर्शन हेतु पधारना।
१९-२२ सर्वोपरी छपैयाधाम सत्संग शिबिर के अवसर पर पधारना।
२५ एकादशी को श्री नरनारायणदेव के दर्शन हेतु पधारना।
२८ श्री नरनारायणदेव को केसर स्नान स्वयं के करकमलो द्वारा पूर्ण करना।
२९ पूनम के दिन श्री नरनारायणदेव का दर्शन करके सत्संग सभा में पधारना।



प.पू. लालजी महाराजश्री के कार्यक्रम की रुपरेखा (जून-२०२६)

६ श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर पारायण के अवसर पर पधारना।
७ लुणावाडा गाँव में पधारे।
११ एकादशी को श्री नरनारायणदेव के दर्शन हेतु पधारना।
१८ श्री नरनारायणदेव के दर्शन हेतु पधारे।
१९-२२ सर्वोपरी छपैयाधाम सत्संग शिबिर के अवसर पर पधारना।
२६ श्री नरनारायणदेव का दर्शन करके संत मंडल की मिटिंग में पधारे।
२७ श्री स्वामिनारायण मंदिर धोलका ''त्योहार'' के आयोजन पर पधारना।
२८ श्री नरनारायणदेव के केसर स्नान अपने करकमलो से पूर्ण किये।
२९ पूनम के दिन श्री नरनारायणदेव का दर्शन करके सत्संग सभा में पधारे।

श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति के मुख से

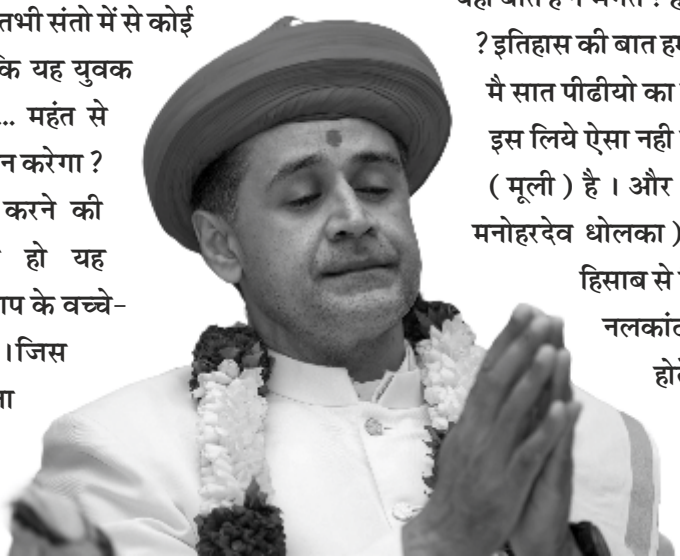
अमृतवचनो

संकलन : गोरधनभाई वी. सीतापरा (हीरावाडी-बापुनगर)

श्री स्वामिनारायण मंदिर, धोलका १९९ वाँ वार्षिक पाटोत्सव के अवसर पर, ता. ०७-०५-२०२६ : मुरली मनोहरदेव हरिकृष्ण महाराज का १९९ वाँ पाटोत्सव अब आते समय अपने चान्स लगे की नही लगे, आप हँस रहे है लेकिन सत्य बात है। कि भीड इतनी होगी की कठिन हो जायेगा। आप दूसरा कुछ समझे है। आपने प्रवचन नही सुना है। इस लिये अधीर नही होना है। यह जो करना है। जीते ही करना है। या मरके भी करना है। जन्म लेने पर भी यह करना है। इस लिये चिंता नही है।

मुझ से किसी ने महाराज की बात कही भी। महाराज क्रोधित हुए थे कि तुमको ही मिला था। मैं मर जाउगा तो भी आप से मिलुगा। मुझसे मिलने लायक क्या है ? मैं भूत में नही मानता हूँ। भगवान के अलावा मुझे कही पर भी रस नही है।

मैं अभी आया तभी संतो में से कोई प्रवचन कर रहा था कि यह युवक संत एस.एस. स्वामी.... महंत से बोले युवक नही तो कौन करेगा ? युवको में जो कार्य करने की क्षमता और लगाव हो यह सदुपयोग है। आज आप के वच्चे-बच्चियो में मेहनत करे। जिस उम्र में जो कार्य करना हो वह करे तो आप खुश होगे । और घर में बैठे तो आप क्या करेगे ? हमें कुछ करना ही नही है। प्रहलादभाई बैठे बैठे हँस रहे है। पंकजभाई कार्य नहीक रते तो प्रहलादभाई यहाँ पर नही बैठते। आज एस.एस. स्वामी यहाँ पर रहकर अधिक प्रगति किये है। लॉन हरे भरे वृक्ष काफी उगाये है। इस कारण से हरिभक्तो की हरियाली बढी है। इस में इतने संत लोगो का सहयोग साथ मिलता रहा है।



अपने मुरली मनोहरदेव २०० वर्ष का पाटोत्सव अब आयेगा। महाराज ने विशेष कर इस भाल प्रांत, भाल तथा नलकाँठा सब कुछ साथ आता है। क्योकि हमारे पीछे भगत (वनराज भगत) बडोल के खडे है। इनको पहले धोलका प्रांत आता था। लेकिन बाद में मूली वालो ने सभी को गेहूँ चना कम पडा। इस लिये प्रतिज्ञा किये कि बिन मांगे माँ भी खाना नही देती है। माँगा हमे कम पडता है। यही बात है न भगत ? हाँ, देखे यह प्रत्यक्ष बात है ? इतिहास की बात हमारे सामने करना नही है। मै सात पीढीयो का सारांश निकाल बैठा हूँ। इस लिये ऐसा नही लेकिन राधाकृष्णदेव ही (मूली) है । और राधाकृष्ण देव (मुरली मनोहरदेव धोलका) यही है । प्रांत प्रांत के हिसाब से दिये है। महाराज ने भाल नलकांठा पूरे को सुखी किये होते तो ये मुरली मनोहरदेव हरिकृष्ण महाराज। हम क्या कर सकते है ? कुछ देर पहले हमने

स्वामीजी चिंता नही करे । भगवान सब कुछ अच्छा करेगे । यह मंदिर तो खडा ही है । अपना ही मंदिर है । चिंता नही करना है।

विषेशकर आप के सिर के उपर पसीना पोछना नही पडे । इस लिये जनवरी मास में सरस उत्सव हो । उत्सव ऐसा हो कि अपने देव खुश हो । हम तो ऐसा मानते है । कई बार बोलते है न भूतो न भविष्यति, ऐसा उत्सव हुआ । उत्सव तो होना ही है । द्विशताब्दी की गई तो लोग बोलते थे। लेकिन उससे भी अच्छा कार्यक्रम हुआ । षष्टी पूर्ति की गई । तब भी यही न भूतो न भविष्यति, इसके बाद तिसरा, चौथा, पाँचवाँ पूर्ण हुआ । यह स्वामिनारायण सम्प्रदाय है। यह उत्सव समैया प्रधान संप्रदाय है । हमसे सरकार ने सीखा है । यह सत्य है । भारत सरकार में विशेषकर जब गुजरात सरकार की टीम थी । तो यह अपने सम्प्रदाय से अधिक सीखी है । जो जीवित रखना है तो समाज को जींवत रखना हो तो स्वामिनारायण भगवान उत्सव-समैया उपर अधिक ध्यान देते थे । शिक्षापत्री में महाराज ने कहाँ है कि हमारे आश्रित धनवान समैया और उत्सव अवश्य करे । देव की महिमा बढे । आप सभी संत, हरिभक्त बच्चे-बच्चियो मेहनत करते है।

विशेषकर धोलका में लोग ईधर-उधर जाते है । धोलका किनारे पर ही ऐसा लगता है । सबका केन्द्र स्थान हो जाये । रोड-रास्ता भी बनाया जायेगा। क्योकि महाराजने जो नौ मंदिर की स्थापना किये है । इस में धोलका भी एक मंदिर है । हम सभी भाग्यशाली है कि ९ मंदिरो में से ५ मंदिर अडमदाबाद देश को मिले है । कौन पाँच मंदिर ? अहमदाबाद, भुज, मूली, जेतलपुर, धोलका, शेष कितने बचे ? वडताल, धोलेरा, जूनागढ और् गढडा । गढडा को आधा गिना जाता है । महाराज वासुदेवानंद स्वामी ने रात में बोलकर चल दिये थे । ऐसा नही कहे कि यह इतिहास गलत है । इस में श्रद्धा इस लिये है । कि, मैं ईन्कार नही करता हूँ । १२ कहेगे तो, १२ कहेगे, ५० कहेगे तो ५० कहेगे, नही तो जोडी देगे । यह महाराज के महिमा की बात है । किसी गाँव की बात हो किसी प्रकार का एक आधार मिले । उसके उपर थोडा सा सिन्दूर लगा हो । तो गाँव के लोग श्रद्धापूर्वक उसे हनुमानजी का रुप दे देते है । हम इसे मना नही कर रहे है । क्योकि सभी स्थानप र भगवान बिराजमान है । श्रद्धा है तो उसे स्वरुप में जोडा जा सकता है । चाहे वह साकार हो या निराकार हो । महाराजने दो बाते वचनामृत में बताये है । अन्वय भी किये है । और व्यतिरेक भी कहे है । मूल स्त्रोत जूडने के लिये चाहिए । महाराज ने तो हम सभी को रुपवान देव प्रस्थापित करके दिये है । और यह काष्ट की मूर्ति (घनश्याम महाराज) की है । हवेली मैं है । अपने रंगमहल में, मूली में और धोलका में है । काष्ट की मूर्ति अहमदाबाद देश के तीन स्थानो पर है । हम सभी भाग्यशाली है । स्वामीजी सिंहासन के लिये बोल रहे है । भगवान के लिये है तो इसमें क्या चिंता करना है ?

जगह के लिये स्वामीजी कह रहे थे । तो अध्यक्षजी यहाँ आ जाये । लालजी महाराजश्री आ जावे तो निश्चित किया जायेगा। आप सभी को कमर कस कर उमंग के साथ तैयार हो जाना है । काम करने का आनंद ही अलग है । महाराज आज ''त्योहार'' है इस में छोटा-बड़ा कार्य करे । शरीर से पैसे से किसी भी प्रकार का सहयोग समय से पहले दिये हो । तो अपनापन आता है। समय देने पर मन लगात है । दूसरा आये, तिसरा आये, मन को पहले तैयार करना पडता है । 'त्योहार' में सबको कार्य करके भगवान को खुश करना है । भगवान अपने है । उनके लिये हमे कार्य करना है।

आज के यजमान परिवार, त्योराह जिसका हम सभी रास्ता देख रहे है । यह परिवार संकल्प किया है । इस प्रांत के सभी भक्त एकत्र हुए है । भगवान सभी को

आशीर्वाद दे । सभी प्रकार से सुखी करे । और अच्छा उत्सव हो । इस लिये आज से तैयारी शुरु कर दो, मन से प्रारम्भ कर दो । साईट उपर १५ दिन माह के बाद प्रारम्भ करेगे । जिससे दूसरा कार्यक्रम बंद हो, दोड-दौडकर थक जाते है । अभी दस दिन में पाँचबार कच्छ आये और गये । आप ताली बजा रहे है। हमारी कमर दर्द करने लगी एक बार सोने पर प्रातः आ जाती है । शरीर है, क्या होगा ? आप को लगता होगा कि आनंद करते है । मजा तो करते है । अभी अपने स्वामी ने कहा, हार लाये थे । इस हार की भी गर्मी होती है । लेकिन सुगंध से आराम मिल गया । मोगरा के फूल का हार)

पिछले दिन पेट्रोल पंप पर महंत खडे थे । कितनी अधिक गर्मी है ? मैने कहा, कैसा मस्त गर्मी है । जहाँ पर रहना है वहाँ पर लडाई करने से क्या लाभ है ? लडना हो तो पाकिस्तान के साथ जाकर लडो । लेकिन यह कोई गर्मी नही है , कोई ठंडक नही है । माध्यम शरीर है । सब कुछ लगता है । आदमी हो गये है । ए.सी. की सभी को आदत पड गयी है । इस लिये यह सब लग रहा है । आनंद तो प्राकृतिक गर्मी सहन करने में है । हमरे बुजुर्ग लोग इसी में बड़े हुए है । गर्मी में एक उपर करके पंखे का कोई आनंद नही लिया है । वह आनंद हम ले रहे है । इसमें नींद आये तो सच्ची है । प्रातः उठने पर कमर दर्द नही होता है । ए.सी. में से उठने पर कष्ट मिलता है । आप बाहर या छत पर रात में सो जाये प्रातः उठ जायेगे कि भी नींद भी उड जाती है । यह सब प्राकृतिक वस्तु है । हम जितना प्रकृति से जुडेगे । इतना हीआनंद मिलेगा । त्योहार में इसे हिस्सा के रुप में रखेगे ।

अभी बारह बजने वाला है । गर्मी का समय है । आप के लिये लड्डू में बिलम्ब हो अच्चीबात नही है । गर्मी में आकरा खराव आता है । अब ठाकुरजी को भोजन करना जाना है । ठाकुरजी को याद करके नेवाला मुँह में रखना । भगवान को खिलाते है अच्छी बात है । नही आज पाचन भी नही होगा । कल जीयेगे भी नही क्योकि ठिकाना नही है । हमको आप को सभी को भगवान भोजन देते है । हम लोगो को मूँगफली और रामदाना भी नही मिलता । आप को ही नही कह रहा हूँ । हम सभी को कह रहा हूँ। महंत स्वमी हम सभी साथ में बैठे थे । मैने पहले भी कहा है कि देखो महंतजी हँस रहे है । भगवान नही मिलते तो हम छपैया में धुमते और आप सीदी सैयद की जाली के पास अंगुठी बेचते । ईधर-उधर केला, आलू बेचते । यह तो अच्छा है कि हम सभी के बुर्जुगो ने अधिक परिश्रम करके यह वारसा प्रदान किया है । सत्संग रखे । भगवाने रखा तो यहाँ तक आये है । यह बहुत बडी बात है । अपने संस्कार का धन्यवाद है । कई बार हम इसे भूल जाते है । पेट के उपर पट्टा बाँधकर सत्संग करते रहे । कितने सहन किये । जाति से बाहर कर दिये । सम्प्रदाय का इतिहास है तो भी सत्संग किये है । तब आज हम सभी ऐसी गाडियो में धुमते है । गद्दी तकिया मिला है । वह भगवान की कृपा है । अभी पूरे पौने बारह बज रहे है। अब अधिक समय नही लेना है । जय स्वामिनारायण ।

श्री स्वामिनारायण मंदिर, जामफलवाडी का १३ वाँ पाटोत्सव एवम् पुनः मूर्ति प्रतिष्ठा महोत्सव : इस विस्तार के अपने हरिभक्त भाग्यशाली है । स्वामीने अभी बोला छोटा है । छोटा तो नही होता है। भगवानका स्वरुप छोटा होता है । बडा होता है । इससे क्या अन्न होता है ? इतने छोटे लालजी है । बडे भगवान का । तीन मंजिल का मत करे । भगवान ये भगवान है । महाराज स्वयं घर से चलते है तो शालीग्राम भगवान को लेकर निकलते है । इतने छोटे होते है । जो पूजा में रखा जाता है । अपना भाव कैसा है । अपना प्रत्यक्ष भाव कैसा है । यह महत्व की बात है।

नरनारायणदेव की मूर्ति, यह स्वामिनारायण

भगवान की आज्ञा है । यह मेरी बात नही है । महाराजने कहा है । किस की कंठी पहनते है । जिसका तिलक और चाँदला करते है । यह महाराज की आज्ञा है । महाराजने यह बात वचनामृत में कहे है । तब शिक्षापत्री नही थी । शिक्षापत्री महाराज प्रगट होने के ४५ वर्ष बाद दिये है । अर्न्तध्यान के चार वर्ष पहले लिखे थे । वचनामृत प्राचीन है । यह शिक्षापत्री से पहले की आज्ञा है । उस समय महाराज देश विभाग नही बनाये थे । तब अपना विचार कुछ भी नही था । अब सब भूत जग गये है । बडे होने पर नाटक बढ जाता है । उस समय की नरनारायणदेव की मूर्ति इसकी ओरिजीनल छाप, जिससे मूर्ति बनती थी । उस समय प्रिन्ट का प्रमाण नही था। फोटो भी नही था । अर्थात् लकडी के उपर कढाई करके विम्ब बनाया जाता था । तत्पश्चात डाई या वेजीलेख कलर की डाई आती थी जो आज भी म्यूजियम में रखी गयी है । कभी दर्शन करने अवश्य आये । म्यूजियम में सभी वस्तुए ऐतिहासिक है । उसके उपर छाप दे कर, कई वस्त्र में है जो संतो को दिया गया था । ऐसी नरनारायणदेव की छाप की मूर्तियाँ आज दिन तक हरिमंदिरो में है । समयान्तर मे कलर किया गया । सोना, चाँदी चढाया गया । महाराजने आप को क्या दिया है कि हम आप को श्री नरनारायणदेव की जो मूर्ति दे रहे है । उसे आप चित्र, धातु या पत्थर मत मानना । मैं उसमें साक्षात् हूँ । यह समझने वाली बात है । घर पर जो पूजा करते है । उसमें भगवान प्रत्यक्ष निवास करते है । इस लिये हम सभी पूजा करते है ।

महाराजने इसी वचनामृत में बाद में अनुसंशा किये है । यह मूर्ति चिंतामणी के समान है । आप जो चिंता करेगे । आप को जो संकल्प आयेगे । उससे यह मूर्ति परिपक्वहोगी । लेकिन कब ? जब इसमें प्रत्यक्ष भाव रखेगे तब । शेष हम भवन के सामने जाकर- यह कुंडल तो टेढा है । किसी पूजारी ने कर दिया होगा । कुछ लोग ऐसे भी होते है । निराकारवादी भी है । हमे उनकी उपेक्षा नही करना है । महाराजने वचनामृत में उनकी भी बात किये है । महाराजने कहा । मेरा आकार दिव्य है । यह तो हरिभक्तो की सुख देने के लिये उनके जैसा बनकर रहता हूँ । भगवान पृथ्वी पर आये तो वह भी बिमार पडते थे । दुखी भी हो जाते थे। गुस्सा भी होते थे । उन्हे गर्मी, ठंडी लगती थी । इस लिये मनुष्य भाव भी आ जाता है । ऐसे भगवान होते है ।

एक बहुत अच्छी बात है । महाराज एक गाँव से दूसरे गाँव चलकर जा रहे थे । मुक्तानदं स्वमी, ब्रह्मानंद स्वामी, नित्यानंद स्वामी संत साथ में थे । महाराज एक सुखे वृक्ष के तने पर बैठकर लघु शंका करने बैठे । तथा खडे हो गये । तभी ब्रह्मानंद स्वामी ने महाराज को देखे और कहे कि आप कैसा भी चरित्र करे । मैं आप को भगवान ही मानने वाला हूँ । रिएक्शन मानव की तरह होना चाहिए । लगे इसमें काम है ? यह तो मनुष्य है मेहसाना में कशली बाने, यहाँ खिचडी का दातून किये । कुछ लोगो को खराब लगा होगा । कुछ लोग भगवान के पास रहकर भी भगवान नही मानते है ।

हमे प्रयास करना है सत्संग में रहकर सत्संग एक यात्रा है । पूरा जीवन ही यात्रा है । पैदा हुए, विद्यालय में गये । मार खाये, फेल हुए पास हुए, यह सब होता है ? अभी तो मारा भी नही जाता है । इसमें से लोग खराब बन रहे है । मार खाने वाला व्यक्ति अवश्य प्रतिभावान बनता है । बुर्जग सभी मार खाकर बडे बने है । अभी का लडका मार नही खा सकता है । पुलिक को बुलालेगा, आप को पुलिस पकड ले जायेगी । पूरा जीवन ही एक यात्रा है । सत्संग की यात्रा मानव बनाती है । भगवान के समीप ले जाती है । अपना स्वभाव प्रकृति के दोष को दूर करने वाला है । उसी के लिये प्रयास करना है । तुरंत सब कुछ नही मिलता है । फलहार सभी को अच्छा नही लगता है । अब तो सभी को

अच्छा लगता है । फराल अच्छे आने लगे है । अब तो फलहारी आटा भी आ गाय है । एक जगह एकादशी के दिन फलहारी पिजा बना था । इस में एकादशी कहाँ पर रहे ? यह तो अच्छा है । समय के साथ बहुत कुछ बदला है । एकादशी के पीछे का भी इतिहास है । एकादशी लीगल अवकाश का दिन है । उस दिन किसान खेत में नही जाता था । बुर्जुगो को ज्ञात होगा । बैलो को आराम मिलता था । पहले शनिवार, रविवार जैसा नही था । इस लिये रामनवमी थी, जन्माष्टमी थी । बसंत पंचमी थी । इन दोनो पर अवकाश रहता था । उस दिन खेत पर जाने से छोटे से छोटे जीव का उध्धार की व्यवस्था थी ।

हम सभी भाग्यशाली है । गंगा, गोदावरी काशी, घर बैठे मिले है । अक्षरवासी, भगवान चलकर घर पर आये है । आप यहाँ पर भाग्यशाली है । एक मंदिर चढने पर भगवान मिल जाते है । नही तो कई मंजिल चढने पर भी भगवान नही मिलते है । सचिवालय की मंजिल चढे । ये तो भगवान जैसे भगवान है । सरल है । अपने घर में है । अपने अंतर में है ।

नीचे बहने कितने समुदाय में बैठे है । सभी बहनो को धन्यवाद है । स्वामीने कहा है कि मंदिर में आते जाते रहे । इन छोटे बच्चो के लिये है । कल बड़ा होगा । अच्छा होगा अपने विचार के विपरीत भगवान बहुत कुछ दे देते है । सुख के साथ सत्संग की वृद्धि करे । संत और आप परिश्रम करके भगवान को खुश रखे । ऐसा कारय् करे ।

कह दे, आ ही रहे है (अन्य कार्यक्रम मे जाने के लिये) सामने वाले को चिंता अधिक रहती है । अब क्या करे । प्रतीक्षा में बैठे है । भगवान का काम है तो पूरा तो करना ही है । भगवान के कार्य में वजन नही होता है । महंत स्वामी कहते है कि दो मिनट ही बोलना है । दो मिनट में क्या कहे ? जय स्वामिनारायण कहने में दो मिनट लग जायेगा । लेकिन आनंद आया । यहाँ पर बैठकर बात करने में । हजारो मानव में क्या बात करे ? दूरबीन लगाने पर दूर वाला आदमी दिखाई देता है । बड़े-बड़े उत्सव-समैया हो, अभी पर्व हुआ, समैया हुआ । इस में दूरबीन से देखना पडा । यहाँ पर तो नजदीक बैठे है तो थोडी बात तो कर ले । भगवान की बात किये है । हमे कहाँ गप्पेबाजी करना है ? सभी को प्रेम भरा आर्शीवाद प्राप्त हो ।

श्री नरनारायणदेव देश के आगामी उत्सव

अषाढ सुद-११ शनिवार ता. २५-७-२०२६ देव शयनी एकादशी उपवास, चातुर्मासना विशेष नियमो ग्रहण करवा ।

अषाढ सुद-१३ सोमवार ता. २७-७-२०२६ जया पार्वती व्रतारंभ ।

अषाढ सुद-१५ बुधवार ता. २९-७-२०२६ मुकुटोत्सव पूनम - गुरु पूर्णिमा अहमदाबाद कालुपुर मंदिर में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री का पूजा-अर्चना, गौरीव्रत जागरण ।

अषाढ वद-२ शुक्रवार ता. ३१-७-२०२६ हिंडोला प्रारंभ. श्रीहरि बालमुकुन्दजी को हिंडोला में झुलाने सांजे ५-०० ।

अषाढ वद-१० शनिवार ता. ८-८-२०२६ प.पू. भावि आचार्य १०८ श्री व्रजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री का प्रगटोत्सव ।

अषाढ वद-११ रविवार ता. ९-८-२०२६ कामिका एकादशी उपवास ।

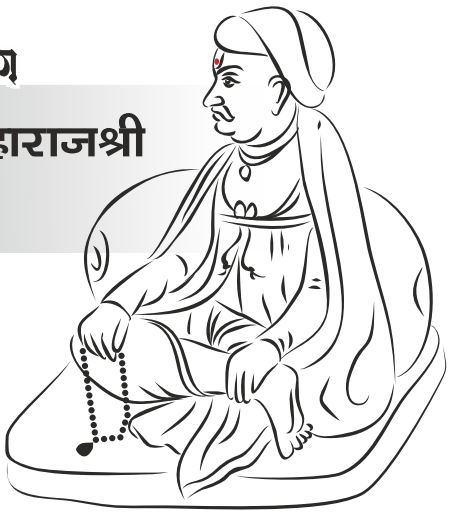
अषाढ वद-३० बुधवार ता. १२-८-२०२६ अमावास्या (खग्रास सूर्य ग्रहण भारतमें दिखेगा नही और पालन भी नही करना है)

श्रावण सुद-१ गुरुवार ता. १३-८-२०२६ शिव पूजन प्रारंभ ।

श्रावण सुद-३ ता. १५-८-२०२६ शनिवार भारत का स्वतंत्र दिवस ।

आदि आचार्यश्री अयोध्याप्रसादजी महाराजश्री

- जे.पी. स्वामी (कोठारी स्वामी कालुपुर मंदिर)



प्रातः काल आचार्य महाराजश्री अयोध्याप्रसादजी का काफिला उनके मूल गाँव इटार की तरफ प्रस्थान किया । कई हाथी, घोडा, बैलगाडी आदि वाहनो पर ठाकोर रामभाई, रामशरणजी तथा हरिसहायकाजी इत्यादी धर्मकुल के सितारो के बाद सद्गुरु उत्तमानंद स्वामी ईत्यादि छोटे-बड़े संत और अनेक हरिभक्त बैठे थे । कोई धार्मिक बात कर रहा था । तो कोई भजन कीर्तन कर रहा था । तो कोई स्वामिनारायण..... स्वामिनारायण की धून बोल रहा था । कुछ लोग शातं चित्त से श्रीहरि नाम की माला जप रहे थे ।

इटार गाँव में से श्रीजी महाराज के पिताश्री धर्मदेव अर्थात् हरिप्रसादजी अपने ससुर के गाँव छपैयापुर में बस गये थे । इसलिये अयोध्याप्रसाद की ईच्छा कि छपैयापुर धाम की तरह अपने पूर्वजो के गाँव इटार में भी मेरा शिखरबद्ध मंदिर बने । इस प्रकार यह इच्छा करके इस शुभ यात्रा को प्रारम्भ किये ।

रास्ते में सभी आनंद करते इटार पहुँचे । इटार में अयोध्याप्रसादजी के चचेरे तथा अन्य परिवार का घर अच्छा था । वहाँ पर जाकर अपने रिश्तेदारो को बुलाकर अपना परिचय दिये । और कहे हम सभी वेदमान पाण्डेय के संतेान है । इस प्रकार हम सभी आपस में भाई है । वेदमान के पुत्र बंशीघर, उनके पुत्र कन्हैयाराम, उनके पुत्र बालकराम और उनके पुत्र हरिप्रसादजी थे । हरिप्रसादजी के तीन पुत्र रामप्रतापभाई, घनश्याम महाराज तथा ईच्छारामजी । उसमें से बीच वाले घनस्याम प्रसादजी ११ वर्ष की अवस्था में गृहत्याग करके बन विचरण करते करते गुजरात आये । यहाँ पर स्वामिनारायण की महिमा बढाये । उन्होने सिद्ध किया कि साक्षात् पूर्ण पुरुषोत्तम नारायण श्रीकृष्ण भगवान उनके रुप में पृथ्वी उपर धर्म की महिमा बढाने के लिये पुनः जन्म धारण किये है । उनके बडे भाई रामप्रतापजी के पुत्रो में से अयोध्याप्रसादजी और छोटे भाई ईच्छारामजी के पाँच पुत्रो में से रघुवीरजीने स्वामिनारायण भगवान को प्रस्तापति की अहमदाबाद और वडताल देश की गद्दी के आचार्य रुप में श्रीहरि ने नियुक्त किया । यह सभी बाते अपने चचेरे भाईयो से की थी । अपनी धार्मिक दिग्विजय की बात करके उन्होने छपैया की तरह यहाँ पर भी शिखरबद्ध मंदिर बनाने की ईच्छा जताई थी । अपने बिरादर के जो लोग यहाँ पर है । यह बाहर जा चुके है । उन्हे निमंत्रण देकर समूह भोजन भी कराये ऐसा अयोध्याप्रसादने अपनी ईच्छा व्यक्त किये थे ।

इस प्रकार इटार के पाण्डेय लोग उनके चचेरे भाई हरिप्रसादजी अवतारी पुत्र घनश्याम प्रसाद ने गुजरात में धर्म की ज्योति जगाये । वह बात सुने थे । आज उनके दत्तक पुत्र अयोध्याप्रसादजी के पास से प्रत्यक्ष बात सुनकर खुश हुए । उनके किये यह गौरव की बात थी । जिस के परिवार में साक्षात् परमेश्वर मानव रुप मे जन्म धारण करे तो वह परिवार इस लोक में ही नही । वह तीनो लोको में यश और गौरव का अधिकारी बने सौभाग्य शाली है ।

आचार्य महाराज की इटार में मंदिर बनवाने की ईच्छा उनके भाईयो ने स्वीकार कर लिया । और जमीन देने की तैयारी भी बताये है ।

अयोध्याप्रसादजी को जो जमीन लेनी थी लेकर कुछ दिन वहाँ पर रुके थे। अपने उपस्थिति में शिखरबद्ध मंदिर बनावये। मंदिर तैयार हो जाने के बाद अच्छे मूहूर्त मे अपने नाम के उपर से अवधेश्वर महादेव की विधिपूर्वक प्राण प्रतिष्ठा कराये थे।

प्राण प्रतिष्ठा अच्छे से पूर्ण हो जाने के साथ आनंद से ब्राह्मण भोज का बडा कार्यक्रम रखा गया था। अनेक प्रकार के पकवान बनाये गये थे। सभी को आग्रहपूर्वक भोजन कराये।

आग्रह के साथ आपस में खीचतान हुई। कुछ ब्राह्मण अधिक खाने के शर्त पर आ गये। उसमें से एक ब्राह्मण २० किलो लड्डू खा गया। तथा उनकी तबियत खराब हो गयी। आज के समय बनी वात तो थी नही। आवश्यकतानुसार दवा नही मिल पायी। एक दिन की असह्य पीडा बर्दास्त करे मृत्यु को प्राप्त हो गये। ब्राह्मण की इस प्रकार की मृत्यु से सूचना पवनवेग से फैल गयी। शहर में हाहाकार मच गया था। जहाँ पर कुछ घंटे पहले आनंदका वातावरण था।

अहमदाबाद से महाराज के साथ दामोदरभाई भगतने यह घटना देख लिये थे। वह दौडकर महाराज को सूचित किये।

''बुरा हो गया महाराज, बुरा हुआ। हाँफते हुई दामोदरने बताया। क्या बुरा हुआ? दामोदर भगत! शांति से बात करो, क्या हुआ? आप इतना धबराये क्यो हो? अयोध्याप्रसाद ने भगत से पूछा।

बीते कल ब्राह्मण भोजन के चही-चढा में वह ब्राह्मण बिमार नही हो गये थे।

हाँ उसे क्या हुआ?

उसने आज शरीर छोड दिया महाराज। दामोदर भगतने कहा, महाराज यह घटना अनर्थ वाली है। अभी तो देश-देशांतर के ब्राह्मण को भोज दिये थे। इसी प्रकार अधिक ब्राह्मण मरेगे तो?

''ऐसा नही होगा, दामोदर'' आचार्य महाराज दृढता से बोले ''कि यह ब्राह्मण जिंदा हो जायेगा''। बाहर से आये ब्राह्मण का जीवन यदि आज के दिन समाप्त होने वाला होगा तो भी नही होगा।

दामोदर भगत जानते थे। आचार्य महाराज श्रीजी महाराज श्रीजी के बल से बोल रहे है। आचार्य की बात में और श्रीजी महाराज की उनके उपर कृपा श्रद्धा और विश्वास था।

अयोध्याप्रसादने आँख बंद कर ध्यान किये। श्रीहरि का दर्शन किये। और पूछे ''प्रभु'' हमे यहाँ अपने जाति के ब्राह्मणो को भोजन कराने की ईच्छा है। आप क्या कह रहे है?

'अयोध्याप्रसाद ! महाराज बोले, आप इन ब्राह्मणो को पहचानते नही है। इनके पीछे किनता भी खर्च करोगे। ये कुछ-कुछ कमी बता ही देगे। इस लिये इन्हे कुछ देना हो तो देकर यहाँ से निकल जाओ। और छपैयापुर के धर्मकुल के साथ सम्बन्ध सदैव बनाये रखना। यहाँ पर ब्राह्मण भोजको स्वयं भगवान ने मना कर दिया था। मरे हुए ब्राह्मण को जीवनदान देकर अदृश्य हो गये।

अयोध्याप्रसादजी महाराजने आँख खोलकर देखा कि जहाँ पर ब्राह्मण मरा था। उस स्थान पर गये। ब्राहमणो को स्वर्ण दान देकर छपैयापुर आ गये।

पुनः एकबार ऐसा प्रसंग घट गया। अयोध्यापुरी के श्यामलाल तिवारी की पुत्री के साथ अयोध्याप्रसाद के पुत्र लालजी श्री केशवप्रसादजी महाराज की शादी थी। वहाँ पर आंबलिया गाँव का एक ब्राह्मण मर्यादा से बाहर जाकर भोजन किया। और बिमार हो गया। लेकिन वह मृत्यु को प्राप्त हुआ।

घर में शुभ प्रसंग होने के कारण आचार्यश्री उदास हो गये। चिन्तित होकर बैठ गये। श्रीहरि को याद करके दीपक जलाकर उसके पेट के उपर फेरने लगे। ब्राह्मण खडा हो गया। पुनः खाना माँग रहा था। आठ सेर खांड

का पानी उसने पी लिया था । इसके बाद उसे आराम मिला । पानी पीने के बाद कूद कर खडा हो गया । आचार्य का पैर छूकर बोला मेरी ईच्छा पूरी - सब्जी खाने की है । यह बात सुकनर सभी लोग आश्चर्य में पड गये । सभी लोग बोलने लगे कि इसका पेट है या पाताल ? अभी कितना खायेगा ? कैसे तो खड़ा हुआ है । अब फिर मरना चाहता है क्या ?

लालजी केशवप्रसादजी महाराज विवाह पर अयोध्याप्रसादजी अयोध्या में उस समय जितने मंदिर थे । सभी वैरागियो को तथा ब्राह्मणो को भोजन कराके भरी सभा में अधिक दान दिये ।

विवाह के अवसर के बाद सभी लोग छपैयापुर वापस आया कुछ दिन के बाद अयोध्या के राजा मानसिंहजीने अपने कार्यालय में सभा करने का निमंत्रण दिये थे । अयोध्या के कई बैरागी और काशी के कई विद्वान के साथ मिलकर मानसिंह ने ऐसा माहौल बनाया कि गुजरात में स्वामिनारायण ने रामचंद्र जी भगवान की सेवा छुडाकर कई लोगो का अपना स्मरण करने को प्रेरित कर दिया है । इस सम्प्रदाय के दो आचार्य इस मे से एक छपैया पधारे है । उनके साथ सभा किये । उन्हे पराजित करके गलत सिद्ध करने का अवसर है ।

मानसिंह इस गुस्से में आकर सभा के लिये आचार्य महाराज को निमन्त्रण भेजे थे । अयोध्याप्रसादजी कहाँ पीछे पडने वाले थे । उन्होने तुरंत निमंत्रण स्वीकार कर लिये । निश्चित समय पर अपने काफिले के सात पहुँच गये ।

अयोध्या के राजदरबार में भीड के मध्य दोनो पक्षो में धार्मिक चर्चा हुई । अयोध्या और काशी के विद्वान ज्ञान में तेज थे । यहाँ अयोध्याप्रसादजी के पास सेवकराम शास्त्री जैसे मैदान मैं आये थे । घंटो तक चर्चा चली । अंत में सेवकराम थक गये । ऐशा बताये । शास्त्री उत्तमानंद स्वामीने देखा । स्वामी उनके देखने का मर्म समझ गये । इस लिये वे मैदान को सम्भाल लिये । एक प्रहर तक वह सरस्वती का गंगाप्रवाह बहाये । तथा सभी को दिग्मूढ कर दिये । उत्तमानंद स्वामी के पास अंत में अयोध्या और काशी के पंडितो को दबाये । बहार गये । अयोध्याप्रसादजी महाराज की विजय हुई ।

उसी समय श्रीजी महाराज की ईच्छा थी की मानसिंह देखे तो अयोध्याप्रसाद महाराज के स्थान पर चर्तुभुज रुप वाले धनुर्धारी रामचंद्र की मूर्ति दिखाई दी ।

महाराज की प्रेरणा से राजा मानसिंहने भूतकाल की छबी भी ताजी हो गयी । धर्मदेव अयोध्या में रहते थे । तब घनश्याम महाराज, राजा मानसिंह, केसरीसिंह और भवानीसिंह सभी मित्र थे । उस समय महाराज अनेक चमत्कारो द्वारा सभी को प्रभावित किये थे । यह सब याद आने पर राजा मानसिंहने बताया । मैं विश्वास से कह सकता हूँ कि घनश्याम वास्तव में भगवान है । मुझे उनका चमत्कार आज भी याद आता है । यह धार्मिक दिग्विजय देखनेप र सब कुछ समझ में आ रहा है ।

मानसिंह को अयोध्याप्रसादजी महाराज में भी ईश्वरीय गुण दिखाई दिया । राजाने स्वयं घनश्याम महाराज और अयोध्याप्रसादजी महाराज की जय बुलवाये । सभा पुरी हुई तब अयोध्याप्रसादजी भी सभा में हाजिर रहे । सभी ब्राह्मणो को दान देकर छपैयापुर वापस आ गये ।

अयोध्याप्रसादजी महाराजने छपैयापुर में आकर जाने कि गाय घाट का वन खरीदने की माँग किये । उस के स्थान पर अंग्रेज रेसिडेन्ट मी. टाला जोगीवन बेचने की उपर से मंजुरी का समाचार भेजे थे । यह समाचार जानकर महाराजने गोरा अमलदार के साथ मुलाकात करके अपनी ईच्छा तो गायघाट खरीदने की थी ।

अभी आप जोगीवन ले लो । गायघाट का वन आपको मिले ऐसा प्रयास करुगा । टाला मे समझाया ? 'आप के कहने से मै जोगी वन तो ले लू । लेकिन मुझे

गायघाट वन मे अधिक रस है । इस लिये यह मिलना चाहिए ।

जोगी वन को बेचकर उसका दस्तावेज करवा दिये । अयोध्याप्रसादजी ने जोगी वन खरीद लिये । यह बात बाहर आने के बाद क्षेत्र के तालुकेदार चौक गये । वह अयोध्याप्रसादजी समृद्धि से ईर्ष्या करने लगे । उन्हे पता चला कि गाय घाट के भी सौदे की बात चल लही है । इस लिये तालुकेदार इसमें रोडाडालने के काम में लग गये । वह अंग्रेजो के पास जाकर गायघाट वन खरीदने की ईच्छा व्यक्त किये ।

अंग्रजे सरकार इस अवसर का लाभ उठाने के लिये गायघाट वन को नीलामी की धोषणा कर दिये ।

अयोध्याप्रसादजी महाराजश्री नीलामी में भी वन खरीदने के लिये तैयार हो गये । क्योकि यह वन सुंदर था ? कोई भी इससे मोहित हो सकता था । श्रीजी महाराज ने विश्वामित्री नदी के इस घाट के उपर नहाकर जल क्रीडा किये थे । यह भी सम्प्रदाय के लिये अमूल्य है ।

एक जुट होकर तालुकदार राजा हद से पार बोली लगाते गये । इससे महाराज निरास हो गये । अंग्रेज टालाने यह देखा । वह महाराज से प्रभावित था । उसका मन था कि यह वन अयोध्याप्रसाद महाराज जी को मिले । लेकिन उपर से आदेश था तो वह क्या कर सकता था ?

महाराज को निराश देख कर बहाना करके एक दिन के लिये रोक लगा दिया ।

महाराज अपने निवास स्थान पर आये । वह निराश होकर चबूतरे पर बैठे थे । यह वन नही खरीद सकते है । उन्हे शंका होने लगी । शेष धन लगाना व्यर्थ लग रहा था । क्योकि तालुकेदार पर जा गया था । वह पीछे हटे दिखाई नही दे रहा था । दूसरे दिन बोली लगाने से महाराज हट रहे थे ।

वहाँ श्रीजी महाराज स्वयं प्रगट हुए । प्रभु को आया देख आचार्य महाराज उन्हे दण्डवत प्रणाम किये । महाराज नजदीक आकर दण्डवत अयोध्याप्रसादजी को उठाकर आलिंगन किये ।

'क्यो अयोध्याप्रसाद ! इतना उदास क्यो हो ? सब कुछ जानते हुए श्रीहरि पूछ रहे है ।'

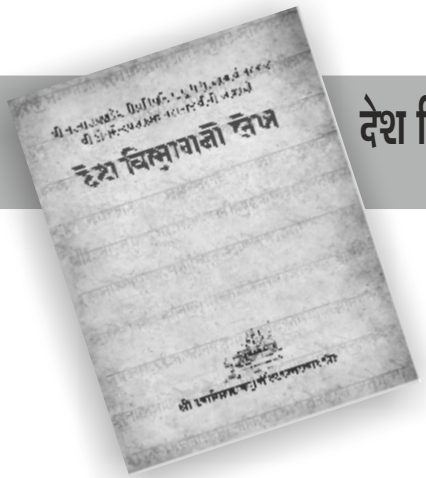
प्रभु, आप तो अर्न्तयामी हो । सब कुछ जानते है । मनुष्य लीला कर क्यो रहे है । आप की कृपा के बाद मुझे पीठे हटना पड रहा है ।

''तुम्हे किस कारण से पीछे हटना पड रहा है ? हँसते-हँसते श्रीहरि बोले ''मै किस लिये हूँ ? कल तुम अवश्य जाना, कल से अधिक बोली लगाना । अब तालुकदार की क्षमता खत्म हो गयी है । वह तुम्हारे सामने खडा नही रह सकता है । और भाग जायेगा । निराश हुए विना गायघाट खरीद लो । आगे चल कर इस स्थान की महिमा अधिक बढेगी । यहां पर मेला लगेगा । हजारो लाखो लोग वहाँ पर आयेगे। छपैयापुर के चारो तरफ तीन योजन तक दूसरे असंख्य मंदिर बनेगे ।

श्रीजी महाराजने यह भी कहा कि ''बद्रिकाश्रम में अभी तक सूर्यवंशी और चंद्रवंशी दो राजा तपस्याक र रहे है । कलियुग के अंत में दोनो राजा पृथ्वी के उपर आभ फैलायेगे । ये राजा पूरे प्रजा में मेरी महिमा बतायेगे । तब हमारे जन्म स्थल की महिमा भी बढने लगेगी ।

महाराजने एक ऐसी भविष्यवाणी किये कि ''कुछ ही समय में इस पृथ्वी के उपर विमान जैसे बैल विमान गाडी से चलेगे । इतना ही नही छपैयापुर से अहमदाबाद तक एक दिन कुछ समय में संदेश भेजने की सुविधा मिलेगी । यह कहकर महाराज अदृश्य हो गये । दूसरे दिन आचार्य महाराजने श्रीजी महाराज के कथनानुसार किये । राजा तालुकदार पीछे हट गये । आचार्य महाराज की आर्थिक क्षमता देखे । वह समझ गये पूरी रियासत बेचने के बाद भी यह वन नही खरीद सकते है । इस प्रकार एक-एक करके लोग चले गये ।

अंत में गायघाट का वन भी आचार्य महाराज को मिला । जब कि तालुकेदार के मूर्खता के कारण थोडा अंग्रेज को लाभ हो गया ।



देश विभाग के लेख के आधार पर सम्प्रदाय का संविधान

संकलन : जी.वी. सीतापरा (अहमदाबाद)

वि.सं. २०८२ अषाढ सुद-१५ गुरु पूर्णिमा के पवित्र अवसर पर इस लेख का अधिक प्रचार-प्रसार करने से सच्चे अर्थ में गुरुपूर्णिमा मनाया कहा जायेगा । कारण सम्प्रदाय के आश्रित सत्संगीयो का फर्ज बनता है कि सम्प्रदाय के संविधान की रक्षा के लिये यथा शक्ति प्रयास करे । देश विभाग का लेख स्वयं श्रीहरि ने शुकमुनि के पास से लिखवाये है । इसके उपर सत्संग के सद्‌गुर संतो और अग्रणी हरिभक्तो के हस्ताक्षर है । न्याय के अदालत में ये लेख सम्प्रदाय के संविधान के रुप में स्वीकार किया गया है । इसका अंग्रेजी में अनुवाद भी है ।

देश के संविधान के अनुसार उस देश का नागरिक कार्य नही करे तो उसे देश द्रोही माना जाता है । देश द्रोही की सजा भी बडी होती है । उसी प्रकार अनंत कोटि ब्रह्मांड के अधिपति स्वंय भगवान श्री स्वामिनारायण द्वारा दिये गये संविधान का पालन यदि नही करे तो सत्संगी की क्या गति होगी । श्रीहरि के शब्द है । हमारी आज्ञा का उल्लंधन करेगे तो वह वचन द्रोही है । तथा गुरु द्रोही है । वह मेरा नही है । वह चांडाल के समान है ।

लिखने वाले स्वामी श्री सहजानंदने महाराज व पाण्डेय अयोध्याप्रसाद रामप्रताप तथा पाण्डेय रघुवीर ईच्छाराम दो भाईयो को हमने दत्तक पुत्र बनाकर अपनी सभी सत्संगी का आचार्य स्थापित कर रहे है ।

श्रीहरिने प्रबन्धकीय सहलता के लिये देश विभाग को दो देश के आचार्य परम्परा स्थापित किये है । जिस समय जो भी देश की गद्दी पर विराजमान रहेगा वह अपने देश का आचार्य रहेगा । तथा गुरु रहेगा । इसके अलावा सम्प्रदाय का कोई गुरु नही रहेगा । अहमदाबाद और वडताल तो सनातन गद्दी है । वर्तमान सनातन आचार्यश्री को पहचानने के लिये दोनो गद्दी पर अर्थात् दोनो मंदिर के सभा मंडप में आचार्यश्री के पट पर लाल साफा पहनकर कौन बैठता है । उसे अवश्य देखे ।

ने अपने मंदिर श्री स्वामिनारातण तथा.... आदि तथा सत्संगी का जो धर्मादा आये । हम दोनो भाईयो को देदे ..... इस वाक्य से धर्मादा का अधिकार मात्र और मात्र आचार्य का हुआ । हमने देखा है कि हमे प्राप्त धर्मादा की रसीद में विद्यमान आचार्यश्री का स्टेम्प है । रसीद मुख्य मंदिर का है ? उदाहरण अहमदाबाद मंदिर का स्टैम्प जो अभि हो तो वह धर्मादा आराध्यदेव भगवान श्री स्वामिनारायण तक नही जाता है ।

सभी देश के सत्संगि सभी की तथा कुसंगी पूरे की धर्मादा अन्न और द्रव्य तथा.... आधि आये तो सब कुछ श्री नरनारायणदेव का है । श्री नरनारायणदेव में अभी जो मंदिर तथा मेडि घर है । वे तथा हवेली है । सभी श्री नरनारायणदेव की है । (प्रत्येक स्थान देश विभाग के आधार पर लक्ष्मीनारायण का भी जाने)

धर्मादा तो नरनारायमदेव का है । देव के प्रतिनिधि आचार्य है । उसके प्रबन्धकर्ता वर्तमान आचार्य महाराजश्री रहते है । इस लिये स्टैम्प के मध्य में **KP** अर्थात् कोशलेन्द्रप्रसादजी पांडेय (वर्तमान आचार्यश्री) लिखा है । वर्तमान समय में कई त्यगी स्वामिनारायण की

चुनरी धारण करके धर्म के नाम व्यापार की दुकान चला रहे है। पारायण तथा सत्संग के माध्यम से भोले अथवा लोगो के पास से दान-धर्मादा एकत्र करके श्रीहरि के संविधान को तोड रहे है। नंद संत किसी स्वामिनारायण नाम से मिलकर प्राईवेट संस्था बनाये है । श्रीहरि की आज्ञा से मंदिर बनावकर श्रीहरि को अर्पण करते है । श्रीहरि के स्वरुप को मंदिर में प्रतिष्ठित करके अनपे स्थान पर दो आचार्य परम्परा बनाये है। सब कुछ प्रबन्ध अपने हाथ में रखते है। उन्हे पहचानने के लिये यह लेख है। जो गृहस्थ संविधान का उल्लंधन करके संस्शाओ में दान देते है । वे दानवीर नही है बल्कि आराध्य देव एवम् सम्प्रदाय के द्रोही है। क्योकि यह इस दान का उपयोग संविधान तोडने के लिये करते है।

कई लोग तो ऐसे है । आचार्य के द्वारा गुरुमंत्र लेकर बाद में प्राईवेट गुरुकुलो में भगवान के दर्शन या सत्संग का नियम रखते है। ये लोग कृत्घन की श्रेणी में आते है । क्योंकि जिस गुरु ने गुरुमंत्र दिये है । उनके अनुवृति में वह नही रहता है। इतना तो ज्ञात होना चाहिए की जिस संस्था में जो मै दौडे-दौडकर जाता हूँ। उस संस्था में प.पू. महाराजश्री कभी भी क्यो नही पधारते है ? भगवान तो आचार्य को अधिक प्रिय है। लेकिन संविधान का दहन होने के कारण महाराज ऐसी संस्था में नही जाते है । घर पर बैठकर ठाकुरजी की प्रार्थना एवम् सत्संग करेगे तो भी इससे भगवान खुश होगे।

..... श्री नरनारायण के मंदिरो से देश सहित उत्पादन उपर लिखित आधार पर आये तो वह पाण्डेय अयोध्याप्रसादजी की है ..... वर्तमान में परम्परानुसार वह वर्तमान आचार्यश्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री का है । वास्तव में अपने प.पू. महाराजश्री एकदम निःस्पृह तथा निर्लोभी है। वह हमेशा कहते है सब देव का है। हम देव के है। वह देव से अलग नही है। देश विभाग के लेख में भी श्रीहरि देव और आचार्य की एकता दिखाई है।

..... दोनो आचार्यो को अपने देश के मनुष्यो को मंत्र देना, उपदेश देना, तथा कंठी बाँधना ..... अपने देश के मनुष्य एवं साधु को तथा ब्रह्मचारी को सफेद वस्त्र का पाला करना... इस वाक्य से कंठी पहनाकर गुरुमंत्र देकर गृहस्थ को सामान्य दीक्षा तथा त्यागी को महादीक्षा देने का अधिकार केवल धर्मवंशी आचार्य को तथा बहनो के लिये आचार्यश्री की पत्नि प.पू.अ.सौ. लक्ष्मीस्वरुपा गादीवालाश्री को स्वयं श्रीजी महाराजने दिया है। दीक्षा बिना भक्ति मार्ग मे सिद्धि नही है। श्रीहरि के इस बचनो के विरुद्ध डुप्लीकेट साधु तथा डुप्लीकेट हरिभक्त बने हुए है । वह अपनी आत्मा को बेवकूफ बना सकते है। लेकिन भगवान को धोखा नही दे सकते है। जहाँ तक आश्रित का नाम श्री नरनारायणदेव या श्री लक्ष्मीनारायणदेव के खाते में नही आयेगा। तब तक श्रीजी महाराज के खाते में नही आयेगा। नाम नही लिखवाने पर धाम तो नही धक्का अवश्य मिलता है।

सम्प्रदाय के परम्पारनुसार मूल सम्प्रदाय के संत मुमुक्षु जीवात्मा ने शरणागति की कंठी पहनासकते है । यदि वह संत मुमुक्षु को आचार्य तक नही भेजे तो वह उसकी कमी है। कंठी पहनेने वाले संत को नये आश्रितो को ज्ञान देना चाहिए। अपने सम्प्रदाय के आप के तथा मेरे गुरु आचार्य महाराजश्री है। सत्य बात यह है कि आचार्य महाराजश्री यदि मंदिर में विराजमान हो तो संत का नये मुमुक्षु को कंठी धारण करवाने के लिये आचार्य महाराज के पास ले जाना चाहिए।

..... हमने आप को जो मंदिर दिया है। कोई साधु, ब्रह्मचारी तथा पालक किसी प्रकार का दावा नही करेगा ..... बडे मंदिर और इसके बाद अर्न्तगत मंदिर श्रीहरि ने आचार्यश्री को दिये है। इस लिये

मंदिरो का प्रबन्ध किस मंदिर में किये रखा जाये । यह अधिकार आचार्य के पास है । गर्व है अहमदाबाद देश में यह परम्परा बनी हुई है।

..... आप के जीव के कल्याण हेतु श्री धर्मवंश के दो गादीवाले आचार्य को सदाकाल निरन्तर माने, मन कर्म वचन से आज्ञा का पालन करे । जो इसका पालन नही करेगा तो वह अधिक कष्ट सहेगा ..... बडे-बडे देवो तथा ऋषियो की वाणी कभी मिथ्या नही होती है। तो श्रीहरि की वाणी कैसे मिथ्या होगी ? डुप्लीकेट भगवाधारी से जुडने पर कभी सुख नही मिलेगा। श्रीहरि के वचन पालन से सुख मिलेगा यह सत्य है। श्रीहरि की आज्ञा जो आचार्य की आज्ञा होती है। अपना पैर कभी बाहर नही रखे।

भक्तगण की सहायता बिना कोई त्यागी कुछ भी करने में समर्थ नही हो सकता है । सर्व प्रथम दोषी तो भक्तगण ही होता है । ये लोग देश लेख को तोडने के सहभागी बनते है। सभी लोगो से श्रीजी नाराज हो जाते है । महाराज जितने दयालु है। उतना ही सिद्धान्त के विषय में व्रज है । युवको को विशेषकर ज्ञान होना है । क्योकि युवको की ऊर्जा शक्ति ले भागु भगवाधारी अपना स्वार्थ सिद्ध करने में भरपूर लाभ उठा रहे है। इस लिये युवको जागो.... जागो... सत्य के मार्ग के लिये किसी का नही मात्र आराध्यदेव, श्रीहरि के वचनो को मानो । कपटियो का कपट उजागर करो। युवक मंडल की सभाओ में देश मंडल की चर्चा करें। किसी की निंदा टीका नही करे। यह सत्संग की सत्य अर्थ में सेवा है । परमात्मा की बाते उजागर करना तथा वचनो का पालन करना श्रीहरि की खुशी है । अपने प्रयास से यदि कोई एक सत्य मार्ग पर आयेगा, देव की नीष्ठावाला होगा तो वह हजार माला के बराबर है।

सत्संग में से कोई जायेगा, सत्संग की हानि होगी ।

समुद्र से यदि मगरमच्छ गुस्सा होगा, समुद्र की कमी नही मानी जाती ।

इस लिये सत्संग की मर्यादा जो व्वहार करेगे तो हानि उसी की है। मूल सम्प्रदाय के मंदिरो में भक्तगणो की संख्या कभी कम नही होती है। शायद भूल से कोई एक व्यक्ति सही मार्ग पर आ जाये तो यह लेख पर्याप्त है।

SHREE SWAMINARAYAN TEMPLE - KALUPUR

Information for foregin donation towards Shree Narnarayan Mandir Trust for all Satsangi, who are belongs to abroad (out side India) remit their donation to Shree Narnarayan Mandir Trust, Kalupur, Ahmedabad. Only in Our FCRA A/c. Details as under.

BANK NAME	:	**STATE BANK OF INDIA**
BRANCH	:	**FCRA CELL, MAIN BRANCH, SANSAD MARG, NEW DELHI-110001**
BENEFICIARY NAME	:	**SHREE NARNARAYAN MANDIR TRUST**
SAVING BANK A/C. NO.	:	**401 890 15898**
IFS CODE	:	**SBIN0000691**
SWIFT CODE	:	**SBININBB104**
BENEFICIARY ADDREES	:	**SHREE SWAMINARAYAN TEMPLE, KALUPUR, AHMEDABAD, GUJARAT, INDIA**

Special instruction for remittance made through NRE Cheque in Indian Rs.-

If any donation route from abroad to NRE A/c in India (of Donor), please donate with your cheque along with copy of passport of related donor, Only afterwards their donation will be credited in above mentioned A/c only.

श्री स्वामिनारायण म्युझियम

श्री स्वामिनारायण म्युजियम के द्वारा से

सभी हरिभक्तो की सुविधा के लिये

प.पू. आचार्य महाराजश्री एवम् समग्र धर्मकुल के संकल्प से अब

श्री स्वामिनारायण म्युजियम के नये स्थापना दिन

हर वर्षे दि. २९ मार्च के दिन पर मनाया जायेगा

श्री स्वामिनारायण म्युजियम में पंजीकृत श्री यज्ञ की सूची - जून-२०२६

पूरे अधिक मास यज्ञ के यजमान श्री जयेशभाई माणेक परिवार - अडालज।

ता. ५-०६-२०२६ श्री नंद धर्मेन्द्रभाई कानजीभाई पटेल (सहजानंद प्रसादम्) - घाटलोडिया।

ता. १३-०६-२०२६ प.पू. बड़े महाराजश्री की प्रेरणा से सत्संगी बहनो अहमदाबाद - वर्त. हजूरी पार्षद वनराज भगत।

श्री स्वामिनारायण म्युजियम में पंजीकृत श्री महाविष्णुयाग की सूची - जून-२०२६

ता. ३-०६-२०२६	महिला मंडल श्री स्वामिनारायण मंदिर सुरेन्द्रनगर - प्रेरक सांख्ययोगी कोकीलाबा तथा सांख्ययोगी उषाबा।
ता. ५-०६-२०२६	प.भ. मुलजीभाई मोहनभाई पटेल - सापावाडा।
ता. ६-०६-२०२६	प.भ. अरविंदभाई नारणभाई पटेल - राणीप।
ता. ७-०६-२०२६	(७ बजे) सत्संग समाज श्री स्वामिनारायण मंदिर - आर.सी. टेकनिकल। (११ बजे) श्री नरनारायणदेव महिला मंडल - कर्मशक्ति नरोडा। (३ बजे) श्री नरनारायणदेव महिला मंडल - आदिश्वरनगर नरोडा।
ता. ९-०६-२०२६	प.भ. परसोतमभाई नारणभाई पटेल - बोपल।
ता. ११-०६-२०२६	सत्संग समाज श्री स्वामिनारायण मंदिर - राणीप।
ता. १३-०६-२०२६	श्री स्वामिनारायण मंदिर - हर्षद कोलोनी - ह. दासभाई - बापुनगर।
ता. १४-०६-२०२६	(प्रातः) श्री स्वामिनारायण मंदिर सत्संग समाज - धोलका - प्रे. महंत स्वामी सत्यसंकल्पदासजी (११ बजे) श्रीमति मंजुलाबेन रसिकलाल सोनी परिवार - नारणपुरा।
ता. २१-०६-२०२६	प.भ. मधुभाई धरमशीभाई दोंगा - निकोल।
ता. २८-०६-२०२६	प.पू. मोटा महाराजश्री एवम् समस्त धर्मकूल के खुशी हेतु - प्रे. शास्त्री स्वामी दिव्यप्रकाशदासजी - ह. संकेत अशोकभाई लाखाणी - न्यु निकोल।

श्री स्वामिनारायण म्युजियम में भेट देनेवालों की सूची - जून-२०२६

रू। ५१,०००/- प.भ. दिपक रमणीकलाल रास्ते तथा वंदना दिपक रास्ते - अहमदाबाद।

शुभ प्रसंग पर भेंट देने के योग्य अथवा व्यक्तिगत संग्रह के लिये - श्री नरनारायणदेव की प्रतिमा वाला ५/१०/२० ग्राम चांदी का सिक्का म्युजियम में प्राप्त होता है।

सूचना :श्री स्वामिनारायण म्युजियम में प्रति पूनम को प.पू. मोटा महाराजश्री प्रातः ११-३० को आरती उतारते हैं।

संप्रदायमां એક માત્ર વ્યવસ્થા શ્રી સ્વામિનારાયણ મ્યુઝિયમમાં મહાપૂજા / મહાભિષેક નોંધાવવા સંપર્ક કરો.

મ્યુઝિયમ મોબાઈલ:- ૯૮૭૯૫૪૯૫૯૭, પ.ભ. પરષોત્તમભાઈ - દાસભાઈ (બાપુનગર) : ૯૯૨૫૦૪૨૬૮૬

www.swaminarayanmuseum.org/com • email: swaminarayanmuseum@gmail.com



॥भक्तिसुधा॥

(प.पू.अ.सौ. गादीवालाश्री के आशीर्वचन में से)
एकादशी सत्संग सभा के अवसर पर (कालुपुर मंदिर हवेली) "सच्चा भक्त बनना कठिन है"
(संकलन : कोटक वर्षा नटवरलाल - घोडासर)

हम सभी को संसार में ''मोह'' और 'आसक्ति' है । यही यदि भगवान के प्रति रहे तो वप ''भक्तिबन जाती है । केवल दिशाबदलना है । किसी भी ताले को खोलने और बंद करने की एक ही ताली होती है । अब तो अंकवाले ताले आते है । नम्बर भी एक होता है । केवल दिशा बदलना पडता है । दिशा बदलने पर ताला खुल जाता है । विपरीत दिशा में धुमाये तो ताला बंद हो जाता है । इस प्रकार हम सभी को मोहनी की आदत पडी है । दिशा बदलने पर मुक्ति और बंधन मिलता है । ''संसार की तरफ धुमाने पर बंधन, भगवान की तरफ मुक्ति, प्रवृत्ति मार्ग तथा निवृत्ति मार्ग को महाराजने गढडा प्रथम पाठ के १४ वे वचनामृत में कहे है । एक त्यागी भक्त है । उसने संसार का त्याग किया है । उसे तीव्र वैराग्य नही है । शरीर द्वारा यथार्थ वर्तमान का पालन करता है । मन में थोडी संसार की वासना है । वह उसे गलत कर देती है । भगवान का पूर्ण दृढ है । दूसरा गृहस्थ भक्त है । उसे भी भगवान का दृढ है । और आज्ञा करके घर में रहता है । और संसार से उदास है । जितना त्यागी को जगत की वासना है । उतना ही गृहस्थ को है । इन दोनो में श्रेष्ठ कौन है ? बाद में मुक्तानंद स्वामी ने कहा ''त्यागी भक्त श्रेष्ठ है ।'' बाद में महाराज ने कहा कि त्यागी को अच्छा भोजन मिलता है । आराम मिलता है । यदि कच्चे मितवाला रहता है तो संसार में वासना हृदय में आती है । त्यागी से गृहस्थ अच्छा है । गृहस्थ भक्त को जब दु:ख आता है । या अधिक सुख मिलता है । तब वह विचार करता है । इससे मैं बंधन में आ रहा हूँ ।'' यह जानकर संसार से उदास हो जाता है । गृहस्थ वासना वाले त्यागी से श्रेष्ठ है । बंधन सभी वस्तुओ से होता है । अच्छे कर्म करे या खराव कर्म करे । कर्तापण की भावना आ जाती है । अर्थात् यह बंधन है । ''संयोगाधीन'' अर्थात् कई संयोग मिलकर कार्य होता है । इसको मैने किया कैसे कहा जा सकता ? ऐसा विचार करने पर कर्तापण का भाव समाप्त हो जाता है । कार्य करे अहंकार नही आये तो भी कर्तापण से मुक्त है । अच्छे काम करते समय भाव आ जाये तो यह भी बंधन है । उदाहरण के रुप में कोई विहग सोने के पीजरे में हो तो यह अच्छे कर्मो का फल है । अंत में तो पीजरा ही है चाहे सोने से या लोहे से ही बना है । ऐसा कर्म करे की बंधन ही न हो । निष्काम भाव से भक्ति करे तो बंधन नही होता है । और कल्याण हो जाता है । लगातार भगवान के नाम का स्मरण करते रहे । तो विचार शुद्ध रहता है । और मन शांत रहता है । भगवान का नाम जुड जाता है । वहाँ पर अशांति और क्रोध का ध्यान नही रहता है । प्रात: पूजा कर लिये । इससे सब कुछ पूर्ण नही ो जाता है । प्रतिदिन नियमति दर्शन केर । नाम स्मरण चालू रखे । किसान भी फसल काटता है । पुन सब कुछ पूरा हो जाता है ? पूरा जीवन चला जाता है ? ऐसा नही होता है - पुन: बुवाई करनी पडती है । इस प्रकार सत्संग में निरन्तरता रखे । भक्त बनकर सच्चा भक्त बनना कठिन होता है । स्चचे भक्तो का समागम नही मिलने पर कठिनाई आती है । ८०% लोग प्रवृत्ति मार्ग में रहकर भक्ति करते है । प्रवृत्ति मार्ग में रुकावटे आता है । उदाहरण रुप में जब हम यात्रा करते है । तो कई जगह पर दो मार्ग होता है । एक नाम ठाला तो दूसरा शहर के अन्दर से जाता है । बायपास पर भीड कम होती है । शहर के अंदर भीड होने से रुकना पडता है । शहर के

अंदर जो का मार्ग प्रवृत्ति मार्ग है । निवृत्ति मार्ग में बायपास रस्ता है । प्रवृत्ति मार्ग अर्थात् गृहस्थ जीवन में मन से भगवान में जुडे रहे । फर्ज पूरी करे । कर्तापण की भावना नही आये । धर्म का पालन करे । बच्चो के प्रति कर्तव्य, समाज को देखने में कई अवरोध आते है । कभी कभी बायपास में भी भीड होती है । निवृत्ति के बाद भी रुकावट अधिक आथी है । सरल रास्ते लेने पर भी यदि रास्ता खराब हो तो ? निवृत्ति मार्ग लेने के बाद भी अन्तर मन दूषित हो तो ? इसका अर्थ् यह हुआ कि हमने जो साधन लिया है । वह दोष युक्त है । इस लिये जल्दी से निकल नही सकते है । स्वभाव तथा वाहन का दोष है । कभी कभी प्रलोभन देखकर हम सभी एक भी जाते है । ये ले ले तो जाते है । साधन अच्छा हो जो रुकना नही चाहिए । कोई मार्ग अपनाये लेकिन सच्चे भक्त बने । सच्चा भक्त बनना कठिनहै । आवश्यकतानुसार एकत्र करे । कितना भी पैसा हो जाये भोजन तो दाल भात रोटी ही करना है । रुपया कोई रख सकता है । किसी की हाय नही लेना चाहिए । शांति और प्रेम से रहना चाहिए । कोई कष्ट में रहे तो उसके साथ बैठकर सांत्वना दे । उसकी बात सुनलो । किसी से अपनी तुलना मत करो । अपना घर सम्भाले । कौन अपना घर कैसे चला रहा है । यह विचार हमे नही करना है । अपने घर का क्या नियम है । यह हम देखे । महाराज जैसे बोले है । उसी आधार पर जीवन जीये जब समझ में नही आये तो भगवान को याद करे । भरतखंड के राजा ''नरनारायणदेव'' मिले है । इनके सानिध्य में रहे । प्रदक्षिणा करे, माला करे । कोई आपको रोकने वाला नही है । सत्संग का सुख ऐसा ब्रह्मांड में कही पर देखे है ? परोक्ष में जाय तो थोडी-थोडी देर में पर्दा गिरा देते है । कुछ जगह पर पैसा देने पर दर्शन मिलता है । हम निंदा नही कर रहे है । सबकी अपनी प्रणाली होती है । अपने सत्संग में कितना सुख है । आप शांति से भक्ति करे । एक जन्म में की गयी भक्ति कई जन्मो के पाप को नष्ट करती है । आप सभी की बुद्धि निर्मल हो, भक्ति कर सके । नाम स्मरण अखंड हो । इसके लिये श्री नरनारायणधेव अधिक शक्ति दे ऐसी प्रार्थना है ।

●

हरि और हर एक ही है

– भावसार पल्लवीबेन विजयकुमार (लांघणज)

शुकदेव महाराज कथा करते है । एक बार इन्दर् राजा का रास्ते में दुर्वासा ऋषि का दर्शन हुआ । अपने गले से माला उतारकर ऋषि ने इन्द्रदेव को दिया । अति धनवान होने पर जीव ध्यान नही देता है । कोई संत आप को फल दे फूल दे उसे माथे से लगाये । आप कोले ने की इच्छा से नही देते है । आप का कल्याण हो । इस भाव से देते है ।

दुर्वासा ऋषि ने प्रेम से इन्द्र ने माला दिया था । लेकिन इनद्रने सम्मान नही दिये । इन्द्रने माला हाथी के सिर पर फेक दिया । हाथी उस माला को पैर तले रौद दिया । यह दुर्वासाजी को अच्चा नही लगा । फूल में लक्ष्मी का निवास होता है ।

जिस घर में फूल वैसे से रौदा जाता है । वहाँ लक्ष्मीजी नही रहती है । घर में शायं काल झगडा होने पर लक्ष्मी नही रहती है । सायंकाल लक्ष्मी घर पर आती है । घर आये का अपमान नहीं करे । सौभाग्यवती स्त्री के केश में लक्ष्मीजी का वास है । घर में सूर्योदय और सूर्यास्त के समय भोजन करने पर लक्ष्मीजी निवास नही करती है ।

दुर्वासा ऋषि ने इन्द्र को शाप दिया कि आप बहुत घमंडी हो गये है । अब आप दरिद्र हो जाये । देव दैत्य का संग्राम होने पर इन्द्र हार गये । स्वर्ग का राज्य राक्षसो को मिल गया । इन्द्र के पास से स्वर्ग का राज्य चला गया । देवता दु:खी हो गये । वे भगवान की प्रार्थना करने लगे । प्रभुने आदेश दिया आप लोग समुद्र मंथन करे । उस में अमृत निकलेगा । यह कार्य आप लोग अकेले नही कर

पायेगे । दैत्यो की सहायता करे । शत्रु की वंदना करके बस में करो । शत्रु बिना कारण के कार्य में रुकावट करेगा । सम्मान तथा मीठे बोलाने से शत्रुता समाप्त होती है । मित्रता बनती है । दैत्य जो माँगे उन्हें आप दे देना ।

देवो और राक्षसो की मित्रता हुई । मंदराचल पर्वत को रस्सा बनाये । उसे समुद्र में ले गये । समुद्र में औषधिडालकर मंथन करने लगे । इस प्रकार मंदराचल पर्वत समुद्र में डूबने लगा । सभी घबरा गये । तभी वहाँ कूर्मनारायण प्रगट हुए । तथा उनके पीठ पर मृदराचल पर्वत रखा गया ।

शांत मन से थोडा विचार करे तो ध्यान पर आयेगा कि पन्द्रह वर्ष पूर्ण होने पर सोलहवा वर्ष लगता है । तब मन में मंथन आता है । यह जीव जवानी में प्रवेश करता है । पूर्व जन्म मे यदि सुख भोगे होगे तो उनके अंदर सुख के संस्कार प्रभावी बनते है । धीरे-धीरे वासना जागृत होती है । समुद्र को विवेक से मंथन करना है । पन्द्रह पूरा होने बाद सावधान रहना चाहिए । यौवन खराब काल है । इसमें अच्छे-अच्छे सम्मान भूल जाते है । मानव मन से पाप करे तो भगवान क्षमा नही करते है । तब से पापभी क्षमा नही है । जीवन बिगडता है । यौवन काल में सावधान रहना चाहिए । मन को पर्वत की तरह स्थिर रखना चाहिए। पर्वत बोलता, चलता नही करता है । इस मन को कूर्मनारायण की पीठ पर रखे । मूर्ति और मंत्र का जो आधारा है । उससे मन स्थिर रहता है । निराधार मन समुद्र में डूबता है ।

देव-दैत्य मंथन कर रहे थे । वह भी अमृत के लिये निकला जहर । भक्ति अमृत है । ज्ञान अमृत है । ज्ञान रुपी अमृत का पान करने से पहले जहर मिलता है । भगवान परीक्षा लेते है । बाद में कृपा करते है । जो भगवान के पीछे पडते है । उनके जीवन में दुख के अवसर आये तो वे जहर है । दुख जहर है । प्रतिकूल अवस्था जहर है । उसकी संसार में गलत निंदा भी होगी । निंदा जहर है । कर्कश वाणी जहर है । सहन करने वाला सुखी होता है ।

विदेश के हरिभक्तो के लिये सूचना

अपने विदेश के मंदिर, अमेरिका, यु.के., केनेडा, न्यूजीलैण्ड, आस्ट्रेलिया, आफ्रिका आदि मंदिरो में कभी कभार उत्सव, पाटोत्सव, सामाजिक - सामाजिक क्रिया कलाप होती है । इसकी जानकारी सभी सत्संगीयो को होना चाहिए । इस के लिये प.पू. लालजी महाराजश्री की आज्ञा है । कि वहाँ की प्रत्येक क्रिया-कलाप का फोटोग्राफ और न्यूज अपने श्री स्वामिनारायण अंक में प्रकाशित करने के लिये उस मंदिर के कोठारीश्री को भेजने की कृपा करे ।

संपर्क नंबर : **9313706095**

E-mail :
shreeswaminarayan9@gmail.com

अंक पोस्ट से नही मिले तो सूचित करे ।

अपना श्री स्वामिनारायण मासिक प्रत्येक महीने की ११ तारीख को नियमित रुप से पोस्ट किया जाता है । प्रत्येक क्षेत्र में पिनकोड के आधार पर पोस्ट से भेजा जाता है । फिर भी कई क्षेत्र में नियमित अंक नही मिलता है । ऐसी शिकायते प्राप्त होती है । उन्हे विशेष सूचना है कि अपने क्षेत्र के पोस्ट आफिस में जाकर फरियाद बुक माँग कर शिकायत का आग्रह करे । २० तारीख के पश्चात अंक नही मिले तो यहाँ के कार्यालय में सूचित करे । अंक स्टोर में होने पर पुनः प्रेषित कर दिया जायेगा । अपनी सदस्यता क्रमांक अवश्य लिखे ।सम्पर्क :

श्री स्वामिनारायण मासिक कार्यालय :

9313706095

प.भ. गोरधनभाई सीतापरा : **8980804941**

सत्संग समाचार

विश्व के सर्व प्रथम श्री स्वामिनारायण मंदिर अहमदाबाद कालुपुर में पवित्र अधिक मास उल्लासपूर्वक मनाया गया

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा एवम् पूरे धर्मकुल परिवार के आशीर्वाद से अहमदाबाद मंदिर के महंत स्वामी स.गु. शा. स्वामी पुरुषोत्तमप्रकासदासजी की प्रेरणा मार्गदर्शन से विश्व के सर्व प्रथम श्री स्वामिनारायण मंदिर अहमदाबाद कालुपुर में पवित्र अधिक पुरुषोत्तम मास (अधिक ज्येष्ठ(परमकृापुल श्री नरनारायण भगवान के सानिध्य और पूरे धर्मकुल के आगेवानी में मनाया गया पूरा आयोजन निजमंदिर परिसर में पूर्ण किया गया। भीषण गर्मी होने के बाद भी प्रतिदिन भाविक भक्त दर्शन का लाभ लेने अधिक संख्या में आते थे। पूरे मास के मध्य ३ कथा पारायण सभा मंडप में की गयी। पाटोत्सव, महाबइषेक, अन्नकूटोत्सव, तुलसी विवाह, हिमालय दर्शन, राजोपचार, हिंडोला आदि को दर्शन को कभी भूलेगा ही नही ऐसा अलौकिक दर्शन था । बहनो के हवेली में प.पू.असौ. लक्ष्मीस्वरुप गादीवालाश्री के सानिध्य में ता. १४-६-२०२६ रविवार के दिन मनाया गया था। हजारो की संख्या में बहनो ने अलौकिक लाभ लेकर धन्य हुई।

पूरे महीने के मध्य पू. महंत स्वामी के सुंदर देखरेख में पू. कोठारी जे.पी. स्वामी, पू. कोठारी बालु स्वामी, भंडारी स्वामी, हरिचरण स्वामी (नटू स्वामी), भक्ति स्वामी, दिव्यस्वरुप स्वामी आदि संत मंडल और बापुनगर आदि क्षेत्र के भाई-बहन हरिभक्तो ने श्रद्धा से अन्कूट आदि किये थे। पूरे अधिक मास में मंदिर पर तिथि के आधार पर प्रसंग मनाया गया। इस सेवा में प.भ. रणजीतसिंह झाला, हार्दिक राजपुरोहित, नीलेस खरसाणी, ब्रिजेश पावरा, फेनिल पटेल, कार्तिक परीख, शिसीर परीख, घाटलोडीया, जीवराजपार्क, कर्मशक्ति, बापुनगर श्री नरनारायणदेव युवक मंडल देर रात तक अविरत सेवा दिये थे।

अधिक मास में सभी संत हरिभक्त की सेवा का ध्यान श्री नरनारायणदेव ने लिया है । श्री नरनारायणदेव के पूजारी ब्रह्मचारी स्वामीने ढाई मास तक अलौकिक मलयागिरी चंदना का लेप लगाकर दर्शनक राये थे । सभी पूजारी संतो को अन्याधिक धन्यवाद है।

पूरे पवित्र अधिक पुरुषोत्तम मास में अनेक उत्सवो जैसे कार्यक्रम में यजमान बनकर लोग लाभ लिये थे।

अधिक जेठ सुद-१ ता. १७-५-२०२६ रविवार **"ग्वालबाल दर्शन"** यजमानश्री अ.नि. बाबुभाई मणीलाल शाह परिवार। अधिक जेठ सुद-२ ता. १८-५-२०२६ सोमवार **"रथयात्रा"** यजमानश्री प.भ. ज्योतिबेन जीतेन्द्रभाई पटेल। अधिक जेठ सुद-३ ता. १९-५-२६ मंगलवार **"श्री नरनारायणदेव पाटोत्सव"** यजमानश्री अ.नि. अमृतलाल जगजीवनदास पट्टणी, अ.नि. कांताबेन अमृतलाल पट्टणी (वढवाणवाला)। अधिक जेठ सुद-४ ता. २०-५-२०२६ बुधवार **"श्री गणेश पूजन"** यजमानश्री प.भ. सुरेशभाई मणीभाई पटेल (पोरवाला - साबरमती - अमदावाद)। अधिक जेठ सुद-५ ता. २१-५-२६ गुरुवार **"शिक्षापत्री जयंती-वसंत पंचमी"** यजमानश्री (१) प.भ. रमेशभाई रणछोडभाई मांदडीया (निकोल) (२) प.भ. जीतेन ब्रजलाल वघासीया (अमदावाद) (३) प.भ. रवि जयंतिभाई पटेल (निकोल) - ह. आशाबेन (४) प.भ. तेजेन्द्रभाई नटवरभाई पटेल - ह. ब्र. राम स्वामी. **"हवेली श्री घनश्याम महाराजपाटोत्सव"** यजमानश्री अ.नि. शारदाबेन शेलत - ह. अस्मिताबेन के. शेलत (अमदावाद) - प्रेरक : सांख्ययोगी मंजुबा - हवेली। अधिक जेठ सुद-६/७ ता. २२-५-२०२६ शुक्रवार **"शाकोत्सव"** यजमानश्री (१) प.भ. जयंतिलाल कानजीभाई ठक्कर परिवार (बावला) (२) प.भ. जीतेन ब्रजलाल वघासीया (अमदावाद)। अधिक जेठ सुद-८ ता. २३-५-२०२६ शनिवार **"राधाष्टमी"** यजमानश्री (१) प.भ. रविभाई शिवजी हालाई (दहींसरा-कच्छ- हाल सीडनी) (२) प.भ. जील हितेन्द्रभाई पटेल (शीलज) (३) प.भ. उषाबेन रमेशभाई पटेल (सी.ए.) (साबरमती) (४) मेक प्लास्ट - ह. जीतेनभाई वघासीया। अधिक जेठ सुद-९ ता. २४-५-२०२६ रविवार **"बाल स्वरूप श्री घनश्याम महाराज पाटोत्सव"** यजमानश्री प.भ. रामदास बापा पटेल परिवार (उनावा) - ह. प.भ. जीगरभाई विक्रमभाई पटेल, प.भ. भाविक संजयभाई पटेल. **"रामनवमी-श्रीहरि जयंती"** यजमानश्री (१) अ.नि. रमणलाल दामोदरदास सोनी - ह. जयेशभाई रमणलाल सोनी (२) प.भ. वालजीभाई करशनभाई हिराणी (बलदीया-कच्छ) (३) प.भ. मिनाक्षीबेन प्रविणचंद्र पटेल (४) प.भ.

नुपुर धृव पटेल - ह. के.के. पटेल । अधिक जेठ सुद-१० ता. २५-५-२०२६ सोमवार **"दशेरा"** यजमानश्री प.भ. ज्योतिबेन जीतेन्द्रभाई पटेल । अधिक जेठ सुद-११ ता. २६-५-२०२६ मंगलवार **"तुलसी विवाह"** यजमानश्री (१) प.भ. ईश्वरभाई मोहनभाई पटेल (सापावाडा) (२) प.भ. अश्विनभाई दानुभाई वाढेर (मांडल) । अधिक जेठ सुद-११ (अगीयारस) ता. २७-५-२०२६ बुधवार **"हाटडी"** यजमानश्री (१) प.भ. मनिषभाई जीतेन्द्रभाई चोकसी (२) अ.नि. काशीबेन अरजणभाई सांचाणी - ह. रेखाबेन कनुभाई सांचाणी । अधिक जेठ सुद-१२ ता. २८-५-२६ गुरुवार ''वामन जयंती'' यजमानश्री (१) प.भ. गणपतभाई गंगारामभाई पटेल (मेमनगर) चि. जयना जन्मदिन निमित्ते (२) प.भ. भावसार संदिपकुमार महेन्द्रभाई - ह. ध्वनित, खनक, हिर, आशाबेन भावसार परिवार (विसनगर), **"रंगमहोल घनश्याम महाराज पाटोत्सव"** यजमानश्री हरिॐ परिवार - ह. प.भ. शैलेषभाई हरेशभाई भावसार । अधिक जेठ सुद-१३ ता. २९-५-२०२६ शुक्रवार **"पेंडा का मनोरथ"** यजमानश्री प.भ. उषाबेन विक्रमभाई ईश्वरभाई पटेल - ह. दक्षाबेन अनिषभाई पटेल, प्रत्पुथा अनिलभाई पटेल (धमासणा-ओस्ट्रेलीया) प्रेरक - जे.पी. स्वामी । अधिक जेठ सुद-१४ ता. ३०-५-२०२६ शनिवार **"नृसिंह जयंती"** यजमानश्री प.भ. निलेशभाई गोपालभाई वेकरीया परिवार, प.भ. रवजीभाई खीमजीभाई हालाई परिवार (बसदीया-अमदावाद) । अधिक जेठ सुद-१५ (पूनम) ता. ३१-५-२६ रविवार **"केसर स्नान"** यजमानश्री : श्री नरनारायणदेव प्रसन्नार्थे एक हरिभक्त - ह. महंत स्वामी.

अधिक जेठ वद-१ ता. १-६-२०२६ सोमवार **"पुष्पदोलोत्सव श्री नरनारायणदेव जयंती"** यजमानश्री (१) प.भ. विशालकुमार भीमजीभाई गोरसीया, प.भ. खुशालीबेन विशालभाई गोरसीया, सुपुत्रो - शौर्य अने रिआन (२) श्रीमती ललीताबेन भरतकुमार पटेल (सोलावाला) (३) प.भ. तेजेन्द्रभाई नटवरभाई पटेल हस्ते - ब्रह्मचारी स्वामी रामेश्वरानंदजी (४) प.भ. प्रकाशचंद्र बलदेवदास पटेल । अधिक जेठ वद-२ ता. २-६-२०२६ मंगलवार **"सूकामेवो हिंडोला"** यजमानश्री (१) प.भ. नेन्शी मितकुमार बारोट - ह. दिव्यस्वरूप स्वामी (२) अ.नि. नाथजीभाई ईच्छाराम शुकल शिष्य मंडल - हस्ते शोभाबेन तेवार (अमेरिका) (३) अ.नि. नटवरलाल गंगाराम सोनी (आखजवाला) प्रीति ज्वेलर्स - राणीप (४) प.भ. सोनी अरविंदभाई लालजीभाई (रामपुरा-भंकोडवाला) - न्यु राणीप । अधिक जेठ वद-३ ता. ३-६-२०२६ बुधवार **"फ्रूट हिंडोला"** यजमानश्री प.भ. अशोकभाई मणीभाई पटेल (बिलासीयावाला) - ह. जे.पी. स्वामी । अधिक जेठ वद-४ ता. ४-६-२०२६ गुरुवार **"आम्रकुंज हिंडोला"** यजमानश्री प.भ. अंक्ष रविभाई पटेल - हस्ते सरोजबेन मुकेशभाई पटेल (देलवाडा) । अधिक जेठ वद-५ ता. ५-६-२०२६ शुक्रवार **"गीरीकंदरा हिंडोला"** यजमानश्री श्री नरनारायणदेव महिला मंडल (न्यु राणीप) । अधिक जेठ वद-६ ता. ६-६-२०२६ शनिवार **"सावनभादो हिंडोला"** यजमानश्री प.भ. पटेल राजेशकुमार ईश्वरभाई (सापावाडा) - ह. ईश्वरभाई पटेल (कोठार ओफिस). **"आम का अन्नकूट"** यजमानश्री प.भ. अश्विनभाई बाबुभाई सोनी, दीपाली अश्विनभाई सोनी, नेन्सी, दर्श अश्विनभाई सोनी । अधिक जेठ वद-७ ता. ७-६-२०२६ रविवार **"कुंजगली"** यजमानश्री प.भ. कांतिभाई गोविंदभाई परमार - ह. प्रशांतभाई, हेमलताबेन, शोभनाबेन, जयकिशन, रिध्धि. **"साटानो अन्नकूट"** यजमानश्री अ.नि. बाबुलाल मगनलाल सोनी, अ.नि. हंसाबेन बाबुलाल सोनी, - ह. महेन्द्रभाई बाबुलाल सोनी, धर्मेशभाई, तेजसभाई, अंकितभाई - हाल सरखेज, अमदावाद (सरावाला) । अधिक जेठ वद-८ ता. ८-६-२०२६ सोमवार **"जन्माष्टमी"** यजमानश्री (१) प.भ. पटेल माहिर बिरेनभाई - ह. हिमानीबेन गौरवकुमार पटेल (२) प.भ. मोदी घनश्यामभाई भोगीलाल (विसनगर) (३) प.भ. हंसाबेन जयंतीलाल शाह, जयंतीलाल जमनादास शाह - ह. फुलमंडली - डॉ. सतीषभाई - प्रेरक : महंत स्वामी (४) प.भ. विमलकुमार कांतिलाल फिचडीया (५) प.भ. शशीकांतभाई प्रभुदास ठक्कर (कांकरिया). ''फ्रूटनो अन्नकूट'' यजमानश्री अ.नि. जीतेन्द्रकुमार रमणलाल आदेसरा (चुडावाला), गं.स्व. दीनाबेन जीतेन्द्रकुमार आदेसरा, ब्रिजेशभाई जीतेन्द्रकुमार आदेसरा । अधिक जेठ वद-९ ता. ९-६-२०२६ मंगलवार **"नंद महोत्सव"** यजमानश्री (१) प.भ. भरतभाई तथा रविन्द्रभाई पटेल (राणीप) (२) श्री नरनारायण सोसायटी महिला मंडल (राणीप) । अधिक जेठ वद-१० ता. १०-६-२०२६ बुधवार **"हिमालय दर्शन"** यजमानश्री प.भ. पटेल शैलेषभाई गोविंदभाई (मोखासण) - फूल मंडली । अधिक जेठ वद-११ ता. ११-६-२०२६ गुरुवार **"हिमालय दर्शन"** यजमानश्री गं.स्व. शारदाबेन प्रभुदास माणेक - ह. जयेशभाई माणेक । अधिक जेठ वद-१२ ता. १२-६-२०२६ शुक्रवार **"वनविचरण"** यजमानश्री प.भ. सोनी जीज्ञेशकुमार नटवरलाल । अधिक जेठ वद-१३ ता. १३-६-२०२६ शनिवार **"लक्ष्मीपूजन, धनतेरस"** यजमानश्री (१) प.भ. जगदीशभाई केशवलाल पटेल (राणीप-राजपुरवाला) - ह.

जीनल, जीगर, शयान, शीव (२) प.भ. सोनी जयंतिलाल रामजीभाई (सेटेलाईट) (३) प.भ. मंजील **"कैलास मानसरोवर"** यजमानश्री प.भ. समीरभाई पटेल - ह. श्री नरनारायणदेवना चरण सेवक ब्रह्मचारी स्वामी घनश्यामानंदजी । अधिक जेठ वद-१४ ता. १४-६-२०२६ रविवार **"श्री हनुमानजी पूजन"** यजमानश्री (१) प.भ. प्रजापति राकेशभाई अमीचंदभाई (गांधीनगर) (२) प.भ. मनोजभाई नटुभाई तथा प.भ. अल्पेशभाई नटुभाई - ह. जे. पी. स्वामी (३) प.भ. मीत हरेशभाई सोलंकी. ''श्री नरनारायणदेव राजोपचार'' यजमानश्री सांख्ययोगी माताओ (हवेली-कालुपुर) । अधिक जेठ वद-३० ता. १५-६-२०२६ सोमवार **"गोवर्धन पूजा"** यजमानश्री (१) प.भ. गोपालभाई नारणभाई वेकरीया परिवार (२) प.भ. बिरेन महेन्द्रभाई सोनी परिवार (३) प.भ. श्रृतिबेन पंकजकुमार त्रिवेदी - ह. ब्रह्मचारी स्वामी रामेश्वरानंदजी **"श्री नरनारायणदेव अन्नकूटोत्सव, श्री राधाकृष्णदेव अन्नकूटोत्सव, श्री धर्मदेव भक्तिमाता हरिकृष्ण महाराज अन्नकूटोत्सव"** अ.नि. स.गु. ब्रह्मचारी स्वामी राजेश्वरानंदजीनी स्मृति अर्थे - हस्ते एक हरिभक्त. (कोठारी स्वामी)

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा तथा स.गु. महंत स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी की प्रेरणा से निम्न लिखित मंदिरो में सत्संग सभा का आयोजन किया गया था

(१) श्री स्वामिनारायण मंदिर आर.सी. टेकनीकल का ९ वाँ वार्षिक पाटोत्सव ता. २०-६-२०२६ के दिन मनाया गया था । सभा का संचालन स्वा. दिव्यस्वरुपदासजीने किया था । कालुपुर मंदिर से संत लोग पधारे थे ।

(२) श्री स्वामिनारायण मंदिर घाटलोडिया अधिक मास के अवसर पर ता. १४-५-२०२६ को सत्संग कथा वार्ता में शा. स्वामी दिव्यस्वरुपदासजी और मूर्ति स्वामीने लाभ दिये थे ।

(३) नूतन श्री स्वामिनारायण मंदिर न्यू निकोल अधिक मास के अवसर पर ता. १२ से १४ जून कथा का सुंदर प्रबन्ध किया गया था । स.गु. महंत शा. स्वा. सत्यसंकल्पदासजी (नारणघाट महंत) ने सुंदर लाभ दिये थे । सभा का संचालन शा. दिव्यस्वरुपदासजीने किया गया था । यहाँ पर एकादशी की सभा की गयी थी ।

(४) निकोल गाँव में मासिक सत्संग सभा स्वा. दिव्यस्वरुपदासजी और संतो द्वारा किया गया था ।

श्री स्वामिनारायण मंदिर एप्रोच (बापुनगर) में अधिक पुरुषोत्तम मास मनाया गया

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा एवम् पूरे धर्मकुल के आशीर्वाद से तथा जेतलपुरधाम के महंत स.गु. शा. स्वा. आत्मप्रकाशदासजी और स.गु.शा. स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी के मार्गदर्शन तथा महंत शा. स्वामी धर्मनंदनदासजी की प्रेरणा से अनेक धार्मिक कार्यक्रम को उल्लास पूर्वक मनाया गया ।

ता. २३-५-२०२६ के दिन प.भ. कांतिभाई के. सोवडिया परिवार यजमान पद पर श्री घनश्याम महाराज के विशेषपूजन, पंजाम-त से अभिषेक, अन्नकूट तथा प्रासंगिक सभा के साथ अधिक मास पाटोत्सव मनाया गया । ता. ३१-५-२६ के दिन केसर आम का अन्नकूट किया गया था । ता. ५-६ से ११-६-२०२६ प.भ.अ.नि. वल्लभभाई पी. खीचडीया परिवार के मुख्य यजमान पद से तथा सहयजमान, महिला मंडल, युवक मंडल इत्यादि के सहयोग से कालुपुर मंदिर के ट्रस्टीश्री ब्र. स्वामी हरिस्वरुपानंदजी (जेतलपुर), एप्रोच मंदिर के महंत शा. स्वामी धर्मनंदनदासजी तथा शा. स्वामी अखंडस्वरुपदासजी के वक्ता पद से संगीत, कीर्तन, के साथ श्रीमद् भागवत सप्ताह पारायण का प्रबन्ध किया गया था । इसके अर्न्तगत पोथीयात्रा, रासोत्सव, श्रीकृष्ण जन्मोत्सव, रुकमणी विवाह तथा प्रसंगोचित सभा में कार्यक्रमो का उल्लासपूर्वक मनाया गया था । इस अवसर पर जेतलपुर, बिलिया, नारणपुरा, मथुरा इत्यादि से ब्रह्मनिष्ठ संत आये थे । तथा आशीर्वाद दिये थे । मंदिर मं सोलर पेनक का संकल्प साकर करने के लिये दाताओ का मोती के माला से सम्मान किया गया था । ता. १४-६-२०२६ रे दिन टोरडा, शामलाजी, ईडर, प्रांतिज और नेत्रमणी धामो के संतो ने मिलकर धार्मिक प्रवास किये थे । ता. १५-६-२०२६ के दिन बहनो के मंदिर में पुरुषोत्म मास तथा धर्मराजा का उजवमणाया किया गया था ।

ग्रीष्म काल में कभी-भार श्री घनश्याम महाराज को चंदन का लेप तथा मोगरा, गुलाब इत्यादि संगधित फूलो से सजाया गया था । मासिक सत्संग सभा का आयोजन नियमति हो रहा है । इसी प्रकार अनेक सत्संग का क्रिया-कलाप अधिक संख्या में भक्तो ने लाभ उठाया था । (गोरधनभाई वी. सीतापरा)

पवित्र अधिक मास में श्री स्वामिनारायण मंदिर शीलज श्री हनमान चालीसा रात्रीय कथा

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा एवम् पूरे धर्मकुल के आशीर्वाद से तथा स.गु. महंत शा. स्वा. पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी (कालुपुर) की प्रेरणा मार्गदर्शन से श्री नरनारायणदेव के अधिकार में श्री स्वामिनारायण मंदिर शीलज के सभी हरिभक्तो द्वारा पवित्र अधिक मास में श्री

हनुमान चरित्र की रात्रि कथा ता. २९-५-२०२६ से ३१-५-२०२६ के मध्य स.गु. स्वा. सत्यसंकल्पदासजी (महंतश्री नारायणघाट) के वक्ता पद से प्रबन्ध किया गया थआ । कथा के अर्न्तगत श्री हनुमान जयंती, श्री हनुमान सिंदूर अभिषेक और हनुमान चालीसा आदि किया गया था । शीलज तथा आसपास के हरिभक्तोने कथा का लाभ लिया था । श्री नरनारायणदेव सत्संग मंडल - बोडकदेव, थलतेज-शीलज-साईस सिटी)

खेरोल श्री स्वामिनारायण मंदिर (बहनोका)

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा एवम् प.पू.अ.सौ. लक्ष्मीस्वरुप गादीवालाश्री के आशीर्वाद से तथा बहनो के श्री स्वामिनारायण मंदिर खेरोल (ता. प्रांतिज) में अधिक ज्येष्ठ पुरुषोत्तम मे गाँव की सत्संगि बहनोने धन-भजन किये थे । (महिला मंडल खेरोल)

जेतलपुरधाम में पवित्र अधिक मास उल्लासपूर्वक मनाया गया

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा एवम् पूरे धर्मकुल के आशीर्वाद से तथा जेतलपुरधाम के महंत स.गु. शा. स्वा. आत्मप्रकाशदासजी और स.गु.शा. स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी की प्रेरणा से तथा महंत स्वामी कृष्णप्रकाशदासजी के अच्छे प्रबन्ध से अधिक पुरुषोत्तम मास में वर्ष भर अपने उत्सव उल्लास पूर्वक मनाया गया ।

श्रीमद् भागवत पंचान्ह पारायण : ता. २१-५-२०२६ से ता. २५-५-२२६ तक श्रीमद् भागवत पंचान्ह पारायण का प्रबन्ध कियाग या था । जिस से यजमान पद से नवीनचंद्र जेठालाल भट्ट तथा अ.नि. वसुमतिबेन नवीनचंद्र भट्ट परिवार ने लाभ हुआ । कथा में गाँव के भक्त और यजमान परिवार ने लाभ लिये थे । वक्ता पद से शास्त्री स्वामी जनमंगलदासजी ने कथा सुनाया था । धामो-धाम से संत पधारकर यजमान परिवार को आशीर्वाद दिये थे ।

हिमालय दर्शन : ता. २४-५-२०२६ से १५-६-२०२६ तक हिमलाय दर्शन का भव्य प्रबन्ध किया गया था । जेतलपुरधाम और बाहर के हरिभक्तो ने अलौकिक हिमालय दर्शन करके धन्य हुए ।

समूह महापूजा : ता. २७-५-२०२६ के दिन प्रसादिभूत सभा मंडप में समूह महापूजा का सुंदर प्रबन्ध किया गया था । इस में जेतलपुर गाँव के आस-पास के हरिभक्तोने लाभ लिया था ।

केसर अभिषेक : ता. ३१-५-२०२६ रविवार के दिन श्री रेवती बलदेवजी हरिकृष्ण महाराज को केसर अभिषेक स्नान विधिवत रुप से किया गया था । इस अवसर पर जेतलपुर और बाहर के भक्त दर्शन का लाभ लिये थे .

पाटोत्सव : ता. ६-६-२०२६ अधिक मास पाटोत्सव के अर्न्तगत श्रीमद् सत्संगिजीवन त्रिदिवसीय कथा पारायण रखा गया था । जिसके यजमान पर प.भ. नटवरभाई लालजीभाई ठक्कर ने लाभ लिया था । यजमान परिवार ३० वर्ष पहले किये गये संक्प की पूर्ति पर तीन दिन तक कथा सुने थे । स.गु.शा. स्वामी जनमंगलदासजी ने कथा सुनाई थी । गाँव के पास वाले भक्त पाटोत्सव का दर्शन तथा कथावार्ता का लाभ लिये थे ।

रासोत्सव : ता. ७-६-२०२६ रविवार के दिन रात में रासोत्सव और कीर्तन, भक्ति का भव्य आयोजन किया गया था । इस में जेतलपुर गाँव के भक्त और आस-पास के ग्राम के भक्तो ने लाभ लिया था । इस रासोत्सव में वासुदेवभाई पाटडीया नंद संतो द्वारा रचित भगवान के कीर्तन गाकर भक्तो को खुश किये थे ।

६ घंटे की अखंड धुन : ता. १४-६-२०२६ के दिन श्री स्वामिनारायण महामंत्र की धुन की गयी थी । इस में जेतलपुर गाँव, आदिश्वर (नरोडा), निकोल, न्यू निकोल, घाटलोडिया, नारोल, वसई, महिजडा और गामडी गाँव के भक्तोने धुन का लाभ लिये थे । इसके मुख्य यजमान प.भ. जिग्नेशभाई और् सह यजमान प.भ. अरुणभाई भावसार परिवारने लाभ लिया था । ६ घंटे तक प्रसादीभूत मंडप महामंत्र धून करके भगवान मय कर दिये थे ।(जनमंगल स्वामी - जेतलपुरधाम)

श्री स्वामिनारायण मंदिर झूलासण का ४९ वाँ पाटोत्सव

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के आज्ञा एवम् पूरे धर्मकुल के आशीर्वाद से तथा स.गु. महंत शा. स्वा. आत्मप्रकाशदासजी तथा स.गु. शास्त्री स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी की प्रेरणा से श्री स्वामिनारायण मंदिर झूलासण का ४९ वाँ पाटोत्सव अच्छे से मनाया गया । इस में जेतलपुर मंदिर से स.गु. महंत स्वामी कृष्णप्रकाशदासजी, स.गु. शा. स्वामी हरिप्रकाशदासजी (मकनसर महंतश्री) आदि संत पधारे थे । आने वाले ५० वे पाटोत्सव के लोगो का अनावरण किया गया था । और् स्वर्ण जयंती पाटोत्सव उल्लासपूर्वक मनाया जाये । ऐसा सभी भक्तोने महाराज के चरणो में वंदना किये । (जनमंगल स्वामी - जेतलुपरधाम)

श्री स्वामिनारायण मंदिर मोडासा (नालंदा-२)

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा एवम् पूरे धर्मकुल के आशीर्वाद से अपने धोलका मंदिर में विराजमान श्री मुरली मनोहरदेव हरिकृष्ण महाराज के २०० वर्ष त्योहार के उपलक्ष् यमें मोडासा (नालंदा-२) श्री स्वामिनारायण मंदिर में ता. २४-५-२०२६ रविवार के दिन २२ यजमानो द्वारा होमात्मक महापूजा का प्रबन्ध किया गया था । इस में गाँव के हरिभक्त लाभ लिये थे ।(के.बी. प्रजापति - मोडासा)

श्री स्वामिनारायण मंदिर जाकासण का १११ वाँ पाटोत्सव

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के आज्ञा एवम् पूरे धर्मकुल के आशीर्वाद से तथा स.गु. महंत शा. स्वामी आत्मप्रकाशदासजी तथा स.गु. शा. स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी की शुभ प्रेरणा से स.गु. महंत स्वामी कृष्णप्रकाशदासजी के अच्छी व्यवस्था से ता. २१-६-२०२६ रविवार के दिन श्री स्वामिनारायण मंदिर जाकासण का १११ वाँ वार्षिक पाटोत्सव उल्लासपूर्वक मनाया गया था । इस दिव्य अवसर पर जेतलपुरधाम से और बापुनगर से स.गु. जगतप्रकाशदासजी, स.गु. अखंडस्वरुपदासजी आति संत पधारकर कथा वार्ता का लाभ दिये थे । प.भ. मनोजकुमार जयंतिलाल पटेल परिवार यजमान बनकर लाभ लिये । (जनमंगल स्वामी - जेतलपुरधाम)

श्री स्वामिनारायण मंदिर बोपल-वणझर की "समयै" के अवसर पर क्रिया-कलाप

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा एवम् पूरे धर्मकुल के आशीर्वाद से बोपल तथा वणझर मंदिर में संतो द्वारा अथक प्रयास के बाद सभी सत्संगि भाई-बहन बालक सत्संग, कथा वार्ता भजन कीर्तन के कारण सत्संगियो की संख्या बढती जा रही है । सत्संगि आकर देव दर्शन तथा कथा वार्ता का लाभ लेते रहते है ।

बोपल मंदिर में २१ वे पाटोत्सव के अवसर पर ता. १९-४-२०२६ से २२-४-२०२६ के मध्य श्रीहरि चरित्र का रात्रि परायण का प.भ. श्री जे.डी. ठक्कर तथा श्री सचिनभाई कनुभाई ठक्कर के यजमान पद से प्रबन्ध किया गया था । जिसके वक्ता शा. स्वा. ध्यानप्रियदासजी थे । पाटोत्सव के दिन हरिकृष्ण महाराज का अभिषेक तथा अन्नकूट का दर्शन सभी हरिभक्त किये थे । उसी प्रकार ३०-४-२०२६ के दिन हरिकृष्ण महाराज को केसर स्नान अभिषेक किया गया था ।

बोपल मंदिर के निर्माता दाता प.भ. रतिभाई खीमजीभाई पटेल तथा उनेक बड़े भाई अ.नि. गोविंदभाई अपने पिता-माता की याद में ता. १७-५-२०२६ से २१-५-२०२६ के मध्य स्वामी घनश्यामस्वरुपदासजी के मधुर कंठ से श्रीहरिकृष्ण स्मृति के कथा का प्रबन्ध हुआ था ।

वणझर के श्री राजूभाई भीखाभाई पटेल परिवार के यजमान पद से ता. १-६-२०२६ से ७-६-२०२६ तक हरिद्वार धाम में श्रीमद् भागवत सप्ताह का आयोजन श्री ध्यानप्रियदासजी के वक्ता पद से हुआ था ।

उसी प्रकार हरिद्वार धाम में भायला गाँव के प.भ. सरदारसिंह मोतीभाई परमार परिवार के यजमान पद से ता. ९-६-२०२६ से १५-६-२०२६ के मध्य श्रीमद् भागवत की कथा का आयोजन ध्यानप्रियदासजी स्वामी के वक्ता पद से हुआ । सभी कथा में हरिभक्तो की संख्या आकर लाभ लिये । इसके बाद प्रति सप्ताह बाल सभा, युवक-युवती सभा का आयोजन किया गया था ।(प्रविण उपाध्याय - बोपल)

श्री स्वामिनारायण मंदिर पाटण (कटकियावाड) अधिक मास

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा से श्री स्वामिनारायण मंदिर पाटण (कटकियावाड) अधिक मास की पूर्णाहुति के अवसर पर प्रातः श्री हरिकृष्ण महाराज का अभिषेक, जनमंगल होमात्मक पाठ, महा आरती और थाल रखा गया था । श्री हनुमानजी महाराज को सिंहासन अर्पण विधि, महामंत्र धुन, शोभायात्रा, आम्रोत्सव तथा सत्संगि बहनो द्वारा भव्य अन्नकूट ठाकुरजी को किया गया था ।

ता. २१-६-२०२६ रविवार के दिन १४ वी बाल सभा का अच्छी व्यवस्था की गयी थी । योग दिवस होने के कारण अपने आराध्यदेव श्री नीलकंठवर्णी को गोपाल योगियोने योग सिखाया गया । इस बारे में बालको को ज्ञान तथा योगाभ्यास करवाया गया था ।(कोठारी प्रकाशभाई - पाटण)

मूली प्रदेश का सत्संग समाचार

श्री स्वामिनारायण मंदिर मूली में अधिक मास का भव्य आयोजन

मूलीधाम में बिराजमान परमकृपालु श्री राधाकृष्णदेव हरिकृष्ण महाराज की परमकृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के आज्ञा तथा पूरे धर्मकुल के आशीर्वाद से तथा मूलीधाम के महंत स्वामी स.गु. स्वामी कृष्णवल्लभदासजी की प्रेरणा एवम् मार्गदर्शन से महापवित्र ज्येष्ठ मास अधिक पुरुषोत्तम मास में ता. १७-५-२०२६ से ता. १४-६-२०२६ पूरे मास आनेवाले निम्न उत्सव

श्री स्वामिनारायण मंदिर मूली में उल्लासपूर्वक मनाया गया। इस में हरिभक्तो को यजमान बनने का लाभ मिला।

ता. १७-५-२०२६ रविवार **"ज्वालबाल दर्शन"**। ता. १८-५-२०२६ सोमवार **"रथयात्रा दर्शन"**। ता. १९-५-२६ मंगलवार **"परशुराम जयंती"**। ता. २०-५-२०२६ बुधवार **"श्री गणेशजीनुं पूजन"**। ता. २१-५-२६ गुरुवार **"वसंत पंचमी, श्री राधाकृष्णदेव, श्री हरिकृष्ण महाराज विगेरे देवोनो महाभिषेक, अन्नकूट दर्शन, रंगोत्सव, शिक्षापत्रीनुं पूजन"**. ता. २२-५-२०२६ शुक्रवार **"कपीला छठ्ठ"**. ता. २३-५-२०२६ शनिवार **"राधाष्टमी प्रागट्य उत्सव"**। ता. २४-५-२०२६ रविवार **"श्रीहरि जयंती, रामनवमी"**. ता. २५-५-२०२६ सोमवार **"दशेरा"**। ता. २६-५-२०२६ मंगलवार **"जलझीलणी उत्सव"**। ता. २७-५-२०२६ बुधवार **"वामन जयंती प्रागट्य उत्सव"**। ता. २८-५-२६ गुरुवार **"मनोरथ (हाटडी)"**। ता. २९-५-२०२६ शुक्रवार **"नृसिंह जयंती प्रागट्य उत्सव"**। ता. ३०-५-२०२६ शनिवार **"ठाकोरजीने केशर स्नान"**। ता. ३१-५-२६ रविवार **"पुष्प दोलोत्सव"**। ता. १-६-२०२६ सोमवार **"हिंडोला दर्शन"**। ता. २-६-२०२६ मंगलवार **"हिंडोला दर्शन आम्रकुंज"**। ता. ३-६-२०२६ बुधवार **"हिंडोला दर्शन गीरीकंदरा"**। ता. ४-६-२०२६ गुरुवार **"हिंडोला दर्शन सावन भादो"**। ता. ५-६-२०२६ शुक्रवार **"हिंडोला दर्शन फ्रूटना"**। ता. ६-६-२०२६ शनिवार **"हिंडोला दर्शन कुंजगली"**। ता. ७-६-२०२६ रविवार **"जन्माष्टमी"**। ता. ८-६-२०२६ सोमवार **"नंद महोत्सव पारणा दर्शन"**। ता. ९-६-२०२६ मंगलवार **"श्री नीलकंठवर्णी वनविचरण दरम्यान हिमालय में गये हिमालय दर्शन"**। ता. १०-६-२०२६ बुधवार **"हिमालय दर्शन"**। ता. ११-६-२०२६ गुरुवार **"हिमालय दर्शन वनविचरण"**। ता. १२-६-२०२६ शुक्रवार **"लक्ष्मी पूजन"**। ता. १३-६-२०२६ शनिवार **"श्री हनुमानजी का पूजन, आरती, अन्नकूट"**। ता. १४-६-२०२६ रविवार श्री राधाकृष्णदेवने **"छप्पनभोग अन्नकूट दर्शन"**। (कोठारी स्वामी त्यागवल्लभदासजी - मूली)

श्री स्वामिनारायण मंदिर कारोल (ता. चूडा)

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा से मूली प्रदेश के कारोल श्री स्वामिनारायण मंदिर में ता. ७-६-२०२६ के दिन यहाँ गाँव के देव मंदिर के साधु, ब्राह्मण परिवारोने रसपुरी महाप्रसाद खिलाया गया था। सभी को भेट भी दी गयी थी। इस में श्रीजी महिला मंडल की सेवा प्रेरक थी। (नरेन्द्रभाई सोनी - कारोल)

श्री स्वामिनारायण मंदिर हलवद (पुराने टावरवाला)

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा से तथा पूरे धर्मकुल के आशीर्वाद से तथा स.गु. शा. स्वामी भक्तिनंदनदासजी की प्रेरणा मार्गदर्शन से श्री स्वामिनारायण मंदिर हलवद (जूना टावरवाला) में अधिक ज्येष्ठ वद-११ से अधिक ज्येष्ठ वद अमावस्या तक १११ घंटे की श्री स्वामिनारायण महामंत्र की अखंड धून हलवद तथा आस-पास के गाँवो के हजारो हरिभ्कतोने लाभ उठाया। उसी प्रकार ठाकुरजी को १११ किलो ग्राम केसर आम केसर का अभिषेक किया गया था। तथा साथ में होमात्मक यज्ञ भी अच्छे से पूर्ण किया गया था। (ब्रह्मदास स्वामी - अनिल दूधरेजीया - ध्रांगध्रा)

विदेश सत्संग समाचार

ब्रोमली (यू.के., आई.एस.एस.ओ.(श्री स्वामिनारायण मंदिर (निर्माणाधीन)

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महराजश्री की आज्ञा से एवम् पूरे धर्मकुल के आशीर्वाद से अपने यू.के. ब्रोमली में निर्माणाधीन श्री स्वामिनारायण मंदिर में अपने पूरे धर्मकुल के संरक्षण में भव्य उत्सव हुआ था। यह कार्यक्रम १९ अप्रैल २०२६ के दिन मनाया गया था। मनाने के समय वैदिक भूमि पूजन, अक्षयपात्र के साथ श्री लक्ष्मी कुबेरजी की पूजा धार्मिक विधि से की गयी थी। साथ ही सिद्धी-वृद्धि श्री गणेशजी, श्री हनुमानजी और श्री नर्मदेश्वर महादेव की भव्य स्थापना प.पू. लालजी महाराजश्री और पूरे धर्मकुल के करकमलो द्वारा पूर्ण किया गया था। इससे पूरा वातावरण आध्यात्मिक ऊर्जा तथा भक्तिमय बन गया था। इस अवसर पर ब्रिटिस राजशाही के तरफ से किंग चार्ल्स के प्रतिनिधि लोर्ड रावल सहित राजकीय व्यक्ति लोग आये थे। तथा यू.के. के अनेक मंदिर कमेटी के सदस्य ट्रस्टी तथा हरिभक्त पधारे थे।

इस पूरे क्षेत्र में यह प्रथम मंदिर है। जो अपने ४०,००० से अधिक हिन्दुभाई-बहन लाभ ले सकते है। इसका विशाल प्रांगण है। कई परिवार अपने सम्प्रदाय से जुड रहे है। अपने वैदिक सनातन धर्म की रक्षा, संवर्धन तथा प्रसार के लिये। यह मंदिर विशेष महत्वपूर्ण है।

भगवान श्री नरनारायणदेव की कृपा द्रष्टि और धर्मकुल के आशीर्वाद से कुछ ही समय में भव्य नवनिर्मित मंदिर का कार्य आगे बढेगा। ऐसी श्रीहरि के चरणो में प्रार्थना है। (ब्रोमली के सभी हरिभक्तगण)

हिंडोला उत्सव

श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर में

दि. ३०-०७-२०२६ से ३०-०८-२०२६ तक

तिथि	तारीख	दिन	हिंडोला
अषाढ वद-२	३१-७	शुक्रवार	फूल
अषाढ वद-३	१-८	शनिवार	पेच
अषाढ वद-४	२-८	रविवार	राजहंस
अषाढ वद-५	३-८	सोमवार	रेशम धागा
अषाढ वद-६	४-८	मंगलवार	रंगोली
अषाढ वद-७	५-८	बुधवार	दिवासुलाई
अषाढ वद-८	६-८	गुरुवार	झरी
अषाढ वद-९	७-८	शुक्रवार	पेपर आर्ट
अषाढ वद-१०	८-८	शनिवार	चोकलेट
अषाढ वद-११ एकादशी	९-८	रविवार	सुखामेवा
अषाढ वद-१२/१३	१०-८	सोमवार	नंग
अषाढ वद-१४	११-८	मंगलवार	शाकभाजी
अषाढ वद-३०	१२-८	बुधवार	चोकलेट
श्रावण सुद-१	१३-८	गुरुवार	फूल
श्रावण सुद-२	१४-८	शुक्रवार	डायमंड पेच
श्रावण सुद-३	१५-८	शनिवार	तिरंगा झंडा

तिथि	तारीख	दिन	हिंडोला
श्रावण सुद-४	१६-८	रविवार	रुपया
श्रावण सुद-५	१७-८	सोमवार	रुद्राक्ष
श्रावण सुद-६	१८-८	मंगलवार	मुखवास
श्रावण सुद-७	१९-८	बुधवार	फ्रूट
श्रावण सुद-८	२०-८	गुरुवार	मयुरकला
श्रावण सुद-९	२१-८	शुक्रवार	सूखामेवा
श्रावण सुद-१०	२२-८	शनिवार	लीपण आर्ट
श्रावण सुद-११ एकादशी	२३-८	रविवार	पवित्रा
श्रावण सुद-१२	२४-८	सोमवार	डायमंड
श्रावण सुद-१३	२५-८	मंगलवार	मोती
श्रावण सुद-१३	२६-८	बुधवार	कंतान आर्ट
श्रावण सुद-१४	२७-८	गुरुवार	सीसा
श्रावण सुद-१५ पूनम-रक्षाबंधन	२८-८	शुक्रवार	राखडी -राखी
श्रावण वद-१	२९-८	शनिवार	बर्तन
श्रावण वद-२	३०-८	रविवार	ग्लास पेईन्टींग

नोंध : हिंडोला की सेवा कोठार कार्यालय में लिखी जाती है - संपर्क : 82380 01666

अहमदाबाद मंदिर में श्री ठाकुरजी का थाल तथा संतवर्णी पार्षदो की रसोई देने वालो की सूची

अधिक जेठ सुद-१ प.भ. डाह्याभाई हरगोविंदभाई पटेल (नाना चिलोडा), अ.नि. डाहीबेन नारणभाई पटेल (बिलासीया), प.भ. हरिकृष्णभाई भोलाभाई पटेल (विहार), प.भ. गणेशभाई मगनभाई पटेल (बामरोली), प.भ. धर्मेन्द्रभाई गौरांगभाई सोनी (अहमदाबाद), प.भ. वत्सल कमलेशभाई पटेल (अहमदाबाद), अ.नि. मंजुलाबेन जगदीशभाई पटेल (गांधीनगर) । **अधिक जेठ सुद-२** प.भ. जटाशंकर बापा (ईन्दौर), अ.नि. मंजुलाबेन जगदीशभाई पटेल (गांधीनगर), प.भ. विभाबेन महेन्द्रभाई पटेल (झुंडाल) । **अधिक जेठ सुद-३** सत्संगी बहेनो (अहमदाबाद), कथाना यजमान अ.नि. अमृतलाल जगजीवनदास पटणी, अ.नि. कांताबेन अमृतलाल पटणी (वढवाणवाला), अ.नि. मंजुलाबेन जगदीशभाई पटेल (गांधीनगर) । **अधिक जेठ सुद-४** प.भ. वाघजीभाई शियाणी (रामपर-वेकरा-कच्छ), भक्ति महिला मंडल (सुरत), प.भ. भरतभाई बाबुभाई दूधात (सुरत), अ.नि. मंजुलाबेन जगदीशभाई पटेल (गांधीनगर) । **अधिक जेठ सुद-५** प.भ. प्रविणभाई कांतिलाल पटेल (सोजा), श्री स्वामिनारायण मंदिर (सोखडा), अ.नि. पुरुषोत्तमभाई एफ. चौहाण (अहमदाबाद), अ.नि. मंजुलाबेन जगदीशभाई पटेल (गांधीनगर) । **अधिक जेठ सुद-७** प.भ. एस. एच. के. (अहमदाबाद), प.भ. देवेन्द्रभाई झवेरलाल पंड्या (चांदखेडा) प.भ. रामदासबापा परिवार (उनावा), अ.नि. मंजुलाबेन जगदीशभाई पटेल (गांधीनगर) । **अधिक जेठ सुद-८** प.भ. वेदांत निलेशकुमार पटेल (माणसा), प.भ. गोरधनभाई गोविंदभाई प्रजापति (हीरापुरा), अ.नि. मंजुलाबेन जगदीशभाई पटेल (गांधीनगर), प.भ. ईन्दुबेन बलवंतभाई लोहार (न्यु राणीप), प.भ. जयंतीभाई भवानभाई पटेल (डुमाणा), अ.नि. महेन्द्रसिंह (डांगरवा), प.भ. अमृतबेन गोविंदभाई (हीरापुरावाला), प.भ. जील जय पटेल (झुंडाल) । **अधिक जेठ सुद-९** अ.नि. मंजुलाबेन जगदीशभाई पटेल (गांधीनगर), अ.नि. त्रिभोवनभाई लक्ष्मणभाई पटेल (अहमदाबाद), प.भ. मंगुबेन सोमदास पटेल (सोला), श्री स्वामिनारायण मंदिर (हर्षद कोलोनी), प.भ. भगवानभाई नरशीभाई (अहमदाबाद), प.भ. दिनेशभाई धनजी पटेल (अहमदाबाद), प.भ. पूजनबेन आर. लुणागरीया (अहमदाबाद), प.भ. रामदास बापा परिवार पटेल (उनावा) । **अधिक जेठ सुद-१०** अ.नि. मंजुलाबेन जगदीशभाई पटेल (गांधीनगर), अ.नि. मंजुलाबेन पोपटभाई कोठारी (धमासणा), प.भ. प्रफुलाबेन बारोट (गांधीनगर), प.भ. मंजुलाबेन करशनभाई (निकोल), प.भ. उर्मिलाबेन दिनेशचंद्र पटेल (नरोडा), श्री स्वामिनारायण मंदिर (मांडवी-कच्छ) । **अधिक जेठ सुद-११** अ.नि. मंजुलाबेन जगदीशभाई पटेल (गांधीनगर), प.भ. भरतभाई करशनभाई परमार (मालणीयाद), प.भ. निलेशभाई कांतिभाई पटेल (लसुन्द्रा) । **अधिक जेठ सुद-११** प.भ. गणपतभाई हंसराजभाई पटेल (गेरीता), प.भ. अ.नि. मंजुलाबेन जगदीशभाई पटेल (गांधीनगर), प.भ. निलेशकुमार कनैयालाल गामी (डभाण) । **अधिक जेठ सुद-१२** महिला मंडल सत्संग - हवेली (अहमदाबाद), प.भ. मनिषाबेन गोपालभाई (झुंडाल), अ.नि. अरविंदभाई मफतभाई पटेल (डांगरवा), अ.नि. स्वामी घनश्यामस्वरूपदासजी, अ.नि. लालजी भगत (कुंडल), प.भ. दयाबेन (अहमदाबाद), अ.नि. जीमील जीग्नेशभाई पटेल (अहमदाबाद), अ.नि. विठ्ठलदास प्रेमचंददास भावसार (सरसपुर), प.भ. रतनबेन नानजीभाई हिराणी (सुखपर-कच्छ), अ.नि. मंजुलाबेन जगदीशभाई पटेल (गांधीनगर), प.भ. लक्ष्मीबेन लालभाई पटेल (गांधीनगर), प.भ. बिपीनभाई दवे तथा नलिन दवे, प.भ. पटेल रमणभाई द्वारकादास (महेसाणा), प.भ. मौलिक मगनभाई डोबरीया, प.भ. विश्वा निलेशकुमार पटेल (माणसा), श्री स्वामिनारायण महिला मंडल (बापुनगर), गोपी मंडल (बापुनगर), महिला मंडल - हवेली (कालुपुर), प.भ. कांताबेन कृष्णभाई पटेल (अहमदाबाद), श्री धर्मभक्ति महिला मंडल (सुरत) । **अधिक जेठ सुद-१३** अ.नि. मंजुलाबेन जगदीशभाई पटेल (गांधीनगर), प.भ. सोनलबेन पटेल (अहमदाबाद), अ.नि. कांताबेन सवजीभाई पटेल (कडी-नरसीपुरा) । **अधिक जेठ सुद-१४** प.भ. सतीषभाई डाह्याभाई पटेल (सापावाडा), अ.नि. मंजुलाबेन जगदीशभाई (गांधीनगर), अ.नि. शारदाबेन विनुप्रसाद पटेल (दहेगाम), प.भ. रेखाबेन कमलेशभाई पटेल (सलाल), प.भ. जयभाई भरतभाई कानाणी (निकोल), प.भ. अनसुयाबेन रमणभाई सोनी (गोता) । **अधिक जेठ सुद-१५** प.भ. पटेल पुरीबेन विठ्ठलदास (मोखासण), अ.नि. मंजुलाबेन जगदीशभाई पटेल (गांधीनगर), प.भ. हर्षदभाई हरिभाई मोदी (वडनगर), प.भ. भारतीबेन लालभाई सोनी (अहमदाबाद), प.भ. संदिपभाई जयरामभाई (अहमदाबाद).

अधिक जेठ वद-१ प.भ. रजनीकाबेन रमेशभाई मोदी (लांभा), प.भ. रूखीबेन अंबालालभाई (गवाडा), अ.नि. मंजुलाबेन जगदीशभाई (गांधीनगर), प.भ. भगवानभाई लवजीभाई पटेल (अहमदाबाद), प.भ. सतिषभाई जे. भावसार (अहमदाबाद), प.भ. मुलजीभाई नारणभाई पटेल (घाटलोडिया), प.भ. भीखाभाई नारणभाई पटेल (धमासणा), प.भ. क्रिशीव हरिकृष्णभाई राखोलीया (अकाला) । **अधिक जेठ वद-२** अ.नि. मंजुलाबेन जगदीशभाई पटेल (गांधीनगर), अ.नि. रतनबाई करसनभाई जीणा जेसाणी (बलदिया-कच्छ), प.भ. हितेषभाई पटेल (अहमदाबाद), अ.नि. वालीबेन मनसुखभाई (संतरामपुर), प.भ. केवलभाई राघवजीभाई पटेल (थोरी मुबारक), अ.नि. चंपाबेन गोरधनभाई (विसतपुरा) । **अधिक जेठ वद-३** अ.नि. मंजुलाबेन जगदीशभाई पटेल (गांधीनगर), प.भ. लक्ष्मण नानजी केराई (मांडवी-कच्छ), प.भ. प्रदीपसिंह केसरीसिंह चुडासमा (जामनगर), प.भ. रामबाई भीमजी वाघजीयाणी (सुखपुर-कच्छ) । **अधिक जेठ वद-४** कथाना यजमान अ.नि. बाबुलाल मगनलाल सोनी, अ.नि. हंसाबेन बाबुलाल सोनी परिवार (अहमदाबाद), अ.नि. मंजुलाबेन जगदीशभाई पटेल (गांधीनगर), प.भ. महेन्द्रभाई वनरावनभाई झरोडीया (पच्छम), प.भ. विमलाबेन पशाभाई पटेल (चांदखेडा), प.भ. जीतेनभाई मणीयार (सुरेन्द्रनगर), प.भ. अमितकुमार रामजीभाई पटेल (अहमदाबाद), प.भ. जशुभाई छगनभाई पटेल (धनसुरा) । **अधिक जेठ वद-५** अ.नि. बाबुलाल मगनलाल सोनी, अ.नि. हंसाबेन बाबुलाल सोनी परिवार (अहमदाबाद), अ.नि. मंजुलाबेन जगदीशभाई पटेल (गांधीनगर), प.भ. भेराराम वाली सत्संग समाज (वाली-राज.), अ.नि. जयसुखभाई मोतीभाई (राजकोट), अ.नि. अमरबेन धनजीभाई हीराणी (मांडवी-कच्छ), प.भ. पृथ्वी, मृन्दा, सुरेश पंचाल (अहमदाबाद), अ.नि. अमरबा धनजी हिराणी (मांडवी-कच्छ), प.भ. चौधरी सविताबेन विष्णुभाई । **अधिक जेठ वद-६** प.भ. जीग्नेशभाई रजनीभाई महेता, अ.नि. बाबुलाल मगनलाल सोनी, अ.नि. हंसाबेन बाबुलाल सोनी (अहमदाबाद), प.भ. वर्षाबेन दिनेशकुमार सुथार (अहमदाबाद), प.भ. हर्षदकुमार राकेशभाई (आंबलीयासण), प.भ. विनोदकुमार नानालाल धोलकीया (अहमदाबाद), प.भ. मधुबेन शैलेषभाई भावसार (अहमदाबाद), प.भ. अशोकभाई बेचरभाई पटेल, प.भ. भानुबेन जादवाणी । **अधिक जेठ**

श्री स्वामिनारायण

अहमदाबाद मंदिर में श्री ठाकुरजी का थाल तथा संतवर्णी पार्षदो की रसोई देने वालो की सूची

वद-७ प.भ. श्वेता लाखाणी, अ.नि. बाबुलाल मगनलाल सोनी, अ.नि. हंसाबेन बाबुलाल सोनी (अहमदाबाद), प.भ. अ.नि. मंजुलाबेन जगदीशभाई पटेल (गांधीनगर), प.भ. चोकसी मनिषभाई जीतेन्द्रभाई (अहमदाबाद), प.भ. संजय कांतिलाल पटेल (पुंधरा), अ.नि. कनुभाई छगनभाई मकवाणा (अहमदाबाद), प.भ. विशाल अमृतलाल आदेसरा, प.भ. चिंतनकुमार अरविंदभाई (कलोल), प.भ. विश्व दक्षेशभाई पटेल (उनावा-चांदखेडा), प.भ. कल्पनाबेन एम. पटेल (शाहीबाग), प.भ. नाथालाल छबाभाई पटेल (अहमदाबाद), प.भ. हार्दिकभाई जेठुभाई सगर (वघाडा), प.भ. रघुवीर एन. अमीन, प.भ. भावनाबेन दिनेशभाई पटेल (राजपर), प.भ. यामीनीबेन मीहीरभाई ठाकर (अहमदाबाद), सत्संग महिला मंडल (ट्रेन्ट), प.भ. अश्विनभाई शामजीभाई दोंगा (कर्मशक्ति), प.भ. सांकलचंद रेवाभाई पटेल (विहार), प.भ. गणपतभाई नागरभाई पटेल (खंडेरावपुरा) । **अधिक जेठ वद-८** अ.नि. मगनभाई प्रेमजीभाई पोरीया, अ.नि. नवीनभाई जटाशंकर शाह, अ.नि. बाबुलाल मगनलाल सोनी, अ.नि. हंसाबेन बाबुलाल सोनी परिवार (अहमदाबाद), प.भ. अ.नि. मंजुलाबेन जगदीशभाई पटेल (गांधीनगर), प.भ. बाबुभाई छोटाभाई पटेल (उवारसद), प.भ. प्रज्ञेश नवीनभाई पटेल (अहमदाबाद), प.भ. जयेशभाई हरिभाई पटेल (लसुन्द्रा), प.भ. संतोकबेन जी. पटेल । **अधिक जेठ वद-९** प.भ. नटवरलाल शर्मा (अहमदाबाद), अ.नि. मंजुलाबेन जगदीशभाई पटेल (गांधीनगर), अ.नि. घनश्यामभाई वशरामभाई राठोड (निकोल), प.भ. घनश्यामभाई हरिभाई परीख (अहमदाबाद), प.भ. नटवरलाल लालजीभाई ठक्कर (धोलका), प.भ. खीमजी वेलजी पींडोरीया (नारणपर-कच्छ), प.भ. जय सीयाराम देवु भगत मोढा (राणा-कंडोरणा), प.भ. जीग्नेशभाई ठाकर (अहमदाबाद) । **अधिक जेठ वद-१०** प.भ. अ.नि. मंजुलाबेन जगदीशभाई पटेल (गांधीनगर), प.भ. भीखाभाई अखाभाई राजपुत, प.भ. किंजलबेन दाणी (अहमदाबाद), प.भ. सोनलबेन संजयभाई पटेल (कुडासण), प.भ. कांताबेन गोरधनभाई बारसीया (राजकोट), प.भ. गोरधनभाई रामजीभाई बारसीया (राजकोट), प.भ. कमलेशभाई बाबुलाल पटेल (मारूसणा), प.भ. अमरकुमार विष्णुप्रसाद पटेल (अहमदाबाद), श्री स्वामिनारायण महिला मंडल (हलवद-भक्तिनगर), प.भ. केयुरभाई हिरेनभाई पटेल (मेमनगर), सरजु महिला मंडल (चांदखेडा), प.भ. अ.नि. अवलबेन मरधाभाई पटेल (उनावा) । **अधिक जेठ वद-११** प.भ. अ.नि. मावजी मुलजी भुडीया (मांडवी-कच्छ), प.भ. अ.नि. मंजुलाबेन जगदीशभाई (गांधीनगर), प.भ. पूर्णिमाबेन दिपेन्द्रकुमार सोनी (अहमदाबाद), अ.नि. को. स्वामी घनश्यामप्रसाददासजी (वडताल), प.भ. विष्णुभाई अंबालाल पटेल (वस्त्राल), प.भ. दिवालीबेन कानजीभाई पोरीया (बोडकदेव), प.भ. नलीनीबेन दवे (ओस्ट्रेलीया) । **अधिक जेठ वद-१२** प.भ. अ.नि. माणेकलाल विठ्ठलदास भावसार (सरसपुर), प.भ. सुमित ठक्कर, प.भ. अ.नि. मंजुलाबेन जगदीशभाई (गांधीनगर), प.भ. अ.नि. मंगुबेन विनुभाई कोठारी, प.भ. प्रविणभाई लालभाई पटेल (कलोल), प.भ. चंद्रकांतभाई एन. राठोड, प.भ. पुष्पाबेन बलदेवभाई पटेल (डांगरवा), प.भ. अ.नि. गणपतभाई भगवानभाई पटेल, प.भ. प्रतिकभाई अशोकभाई, प.भ. करसन प्रेमजी हिराणी, प.भ. अ.नि. दिवाबेन छगनलाल पटेल (रडोदरा), प.भ. तनुकुमार के. डोबरीया, प.भ. नंदुभाई केशवभाई पटेल (झुंडाल), प.भ. सोम्यकुमार प्रफुलकुमार द्विवेदी (यु.एस.ए.), एच. के. ट्रावेल्स - ह. प.भ. हरूभाई (अहमदाबाद), प.भ. भरतभाई चावडा (बलोल-भाल), श्री स्वामिनारायण सत्संग महिला मंडल (मोटेरा), प.भ. गोपालभाई चतुरभाई पटेल (कुडासण) प.भ. उषाबेन मुकेशकुमार पटेल (अहमदाबाद), प.भ. कोकीलाबेन नटवरभाई पटेल (साबरमती) । **अधिक जेठ वद-१३** प.भ. अ.नि. मंजुलाबेन जगदीशभाई पटेल (गांधीनगर), प.भ. रमेशभाई केशाभाई पटेल (वहेलाल), प.भ. अमृतलाल विरजीभाई पटेल (अहमदाबाद), प.भ. अनिताबेन केशवलाल पटेल (प्रांतिया), प.भ. कमलेशभाई नथ्थुदास पटेल, प.भ. भगवतीबेन नयनकुमार पटेल (हीरापुरा), प.भ. मणीलाल सरदारजी चौधरी (समौ), प.भ. महेशभाई नागजीभाई पटेल (अहमदाबाद), प.भ. निलेशभाई सोमचंदभाई कोटक (अहमदाबाद), प.भ. भगवतीबेन चीमनलाल मोदी, प.भ. प्रज्ञाबेन संजयभाई (वडोदरा), प.भ. अ.नि. वर्षाबेन पटेल (चांदखेडा) । **अधिक जेठ वद-३०** प.भ. अ.नि. मंजुलाबेन जगदीशभाई पटेल (गांधीनगर), रजनीकांतभाई प्रभुदास मोदी (अहमदाबाद), प.भ. घनश्यामभाई मनसुखभाई पटेल (संतरामपुर), प.भ. भारतीबेन लालभाई सोनी (अहमदाबाद), प.भ. अ.नि. कानदास करसनदास (वडु), प.भ. तेजलबेन सतिषकुमार (वडु), प.भ. निलेष अने जेनिल (वडु), प.भ. घनश्यामभाई कानदास (वडु), प.भ. दिनेशभाई नारायणभाई पटेल (अहमदाबाद), प.भ. द्विजा भाविनकुमार पटेल (कोबा), प.भ. ललिताबेन भरतकुमार भावसार (वडनगर), सांख्ययोगी मंजुबा तथा सांख्ययोगी भारतीबा (कालुपुर-हवेली), प.भ. सी. एम. परिवार (कलोल), प.भ. रेखाबेन भरतभाई गोर (अहमदाबाद), प.भ. अ.नि. सजनबा भरतसिंह झाला (गोधावी), प.भ. अ.नि. वेलीबाई देवजीभाई संघाणी (अहमदाबाद), प.भ. अपूर्व भरतभाई (नारदीपुर), प.भ. विजयभाई एन. अमीन (वडोदरा), प.भ. करमशीभाई अमरशीभाई सवाणी, प.भ. धीरूभाई जेसंगभाई पटेल, प.भ. शारदाबेन कांतिलाल पटेल (राजकोट), प.भ. अरविंदभाई नारणभाई पटेल (राणीप), प.भ. घनश्यामभाई चिमनलाल पटेल (मारूसणा), श्रीजी भरोसे - ह. भूमित (निकोल), प.भ. घनश्यामभाई मगनदास पटेल (ईटादरा), प.भ. घनश्यामभाई आदरभाई पटेल (शीलज), प.भ. भूपेन्द्रकुमार ठक्कर (अहमदाबाद), श्री स्वामिनारायण मंदिर (झुंडाल), प.भ. कुमुदबेन कांतिलाल दाणी, प.भ. मधुबेन जेठाभाई पटेल (बायड), प.भ. अक्षर बलदेवभाई पटेल, प.भ. नारण विश्राम हिराणी, न्यालकरण गृप, श्री स्वामिनारायण मंदिर (डेमाई), प.भ. जीगरभाई रमेशभाई पटेल (वस्त्राल), प.भ. प्रेमजी लक्ष्मण हालाई (सुखपर-कच्छ), प.भ. ललिताबेन घनश्यामभाई पटेल (आनंदपुरा), श्रीहरि प्रसन्नार्थे (अहमदाबाद), प.भ. शांताबेन शंकरभाई पटेल (हीरापुर), प.भ. हरेन्द्र दुर्गाशंकर शुकल (अहमदाबाद), प.भ. संतोकबेन चौधरी तथा बी.के. चौधरी (माणेकपुर), प.भ. भगवानभाई प्रागजीभाई चौहाण (सुरत).

Printed and Published by **Shastri Swami Purushottamprakashdasji** on behalf of **Shree Swaminarayan Temple** and **Published From :** Shree Swaminarayan Mandir Kalupur, Ahmedabad-380001. Printed at **Asian Printery**, Near Talati Hall, Raipur, Ahmedabad-380001.
Editor : Shastri Swami Purushottamprakashdasji



मांडवी (कच्छ) मंदिर में वृंदावन सेवा अमृत महोत्सव के अवसर पर सभा में आशीर्वाद देते प.पू. आचार्य महाराजश्री ।



लुणावाडा मंदिर में अधिक मास में कथा पारायण के अवसर पर युवको के साथ प.पू. लालजी महाराजश्री ।



वृक्षारोपण अभियान के लिये श्री नरनारायणदेव देश के संत एवम् हरिभक्त की प.पू. लालजी महाराजश्री के साथ मिटिंग ।



धोलका के २०० वे पाटोत्सव ''त्योहार'' के सूचित स्थल का संतो-महंतो के साथ निरीक्षण करते प.पू. लालजी महाराजश्री ।



छपैया मंदिर के पाटोत्सव अवसर पर ठाकुरजी के समक्ष अन्नकूट दर्शन ।



गांधीनगर से-२ तथा उनावा मंदिर में अधिक मास के प्रसंग पर केसर स्नान ।



वडनगर मंदिर में ठाकुरजी को चंदन का वाघा का दर्शन ।





कांकरिया मंदिर में अधिक मास प्रसंग पर ठाकुरजी को चंदन का वाधा का दर्शन तथा हिमालय दर्शन का उद्घाटन करते अहमदाबाद और कांकरिया मंदिर के महंत स्वामी ।



जेतलपुर मंदिर में अधिक मास में ठाकुरजी का अभिषेक तथा कथा पारायण ।

Registered under RNI - No - GUJHIN/2007/20220 " Permitted to post at
Ahd Unaccountable L1 i/o. on 11 the every month under postal Regd. No. GUJ. 581/2024-2026
issued SSP Ahd Valid up to 31-12-2026



अहमदाबाद मंदिर में ठाकुरजी को केसर स्नान करते प.पू. आचार्य महाराजश्री तथा पूज्य लालजी महाराजश्री ।



अहमदाबाद मंदिर में पूनम को नियमित होने वाली सत्संग सभा में दर्शन देते प.पू. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. लालजी महाराजश्री ।





अहमदाबाद मंदिर में अधिक मास में कथा पारायण का लाभ लेते हरिभक्त ।



अहमदाबाद मंदिर में अधिक मास में समूह महापूजा का लाभ लेते हरिभक्त ।





Praful Kharsani